शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 4 | उदयपुर मंगलवार 1 मार्च 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

इन दिनों

शिल्पा शेट्टी ने कहा

उदयपुर से मेरा पूर्वजन्म का नाता है

उदयपुर मुझे बार-बार अपनी ओर खींचता है। यहां की लहरें और लहरिया मुझे बहुत पसंद है। मैं शादी तो यहां नहीं कर सकी किंतु शादी की सिल्वर जुबली अवश्य यहां मनाना पसंद करूंगी

उदयपुर। महिलाओं पर बढ रहे अपराध चिंताजनक हैं। महिलाओं पर बढते अपराधों के पीछे का कारण अपराधियों और बाल अपचारियों की ठीक से परवरिश नहीं होना है।

जो हो चुका, उसे हम नहीं मिटा सकते लेकिन आने वाली पीढियों को ग्रास रूट लेवल से ही अच्छे संस्कार देकर सामाजिक समरसता अवश्य कायम कर सकते हैं।

यह बात बॉलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी ने उदयपुर में पीसी ज्वैलर्स के नये शोरूम के शुभारंभ अवसर पर कही।

शिल्पा ने कहा कि शायद राजस्थान से मेरा पूर्व जन्म का कोई नाता रहा है जो मुझे बार-बार अपनी ओर खींचता है।

उदयपुर की झीलों की लहरें उन्हें बहुत पसंद आती हैं और वे अपनी शादी की सिल्वर जुबली उदयपुर में ही मनाना पसंद करेंगी।

राजस्थान में पहने जाने वाले लहरिया को शिल्पा ने अपनी पसंद बताया व कहा कि यहां की संस्कृति का हर रंग मुझे बहुत आकर्षित करता है। शिल्पा ने उदयपुर का स्मार्ट सिटी के लिए चयन होने पर उदयपुरवासियों को बधाई दी।

अरसे से फिल्मों से दूर रहने के सवाल पर शिल्पा ने कहा कि मुझे लम्बे समय से कोई बढिया स्क्रिप्ट नहीं मिली है जिस पर मैं कोई फिल्म बना सकूं। यदि ऐसी कोई स्क्रिप्ट मिलेगी तो निश्चित रूप से काम करूंगी।

सौंदर्य के स्वर्णिम शिखरों पर स्मार्ट सिटी

-तीन वर्षों में तीन हजार करोड़ के कीर्ति शिखर-
-महाराणा प्रताप खेलगांव के लिए 20 करोड़ की स्वीकृति-
165 हैक्टेयर में फैले राज्य के पहले जैव विविधता पार्क का लोकार्पण

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। जैव विविधता की दृष्टि से समृद्ध इस पार्क में 63 वृक्ष प्रजातियां, 30 झाड़िया, 37 लताएं, 117 शाक, 38 घास, 3 परजीवी सहित 2 टेरिडोफाइट्स की प्रजातियों में चंदन, गूगल व कड़ाया

जैसी दुर्लभ प्रजातियां एवं कई फलदार एवं औषधीय वनस्पति मौजूद है। यहां पैंथर, सेही, लोमड़ी, सियार, जरख तथा सरिसर्प एवं पक्षियों की कई प्रजातियां निवासरत हैं।

वन एवं पर्यावरण मंत्री राजकुमार रिणवा ने मेवाड़ क्षेत्र को प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ स्थल बताते हुए कहा कि वेदों व पुराणों में भी प्रकृति में ईश्वर का निवास माना गया है। हजारों किलोमीटर लम्बी गंगा के पानी का पूर्णत: निर्मल होना इसका ज्वलंत उदाहरण है। ये विचार श्री रिणवा ने 165 हैक्टेयर वन भूमि पर विकसित उदयपुर में प्रदेश के प्रथम बायोडायवर्सिटी पार्क के लोकार्पण समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि पाश्चात्यीकरण के दौर में हम प्रकृति की महत्ता भूलते हुए टीवी व मोबाइल में खोते जा रहे हैं। ऐसे में प्रकृति की गोद में स्थित पेड़ों, वन्य जीवन एवं शुद्ध जलवायु के संपर्क में आने से स्वस्थ जीवन की कल्पना साकार हो सकती है। पेड़ो से परमार्थ की सीख मिलती है जो सदैव दूसरों के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हैं। बौद्धिक बल से समृद्ध मानव जीवन की सफलता के लिए प्रकृति संरक्षण का संकल्प लेकर परोपकार के कार्य करने की जरूरत है।

विद्यार्थियों व शोधार्थियों के लिए यह पार्क अत्यंत उपयोगी साबित होगा। गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि स्मार्ट सिटी उदयपुर नई करवट ले रहा है जहां आगामी तीन वर्षों में 3 हजार करोड़ व्यय किए जाएंगे। महाराणा प्रताप खेलगांव के लिए 20 करोड़ की स्वीकृति मिल गई है। महाराणा प्रताप पार्क विकास के लिए मावली विधायक दलीचंद डांगी, सांसद अर्जुनलाल मीणा व सद्भाव कंस्ट्रक्शन कंपनी के 20-20 लाख के आर्थिक सहयोग को अनुकरणीय बताते हुए अन्य दानदाताओं से भी आगे आकर भागीदारी निभाने का आग्रह किया।

गृहमंत्री ने कहा कि जैव पार्क के लिए 2-2 करोड़ नगर निगम व यूआईटी ने तथा एक करोड़ स्वयं के कोटे से देने की व्यवस्था की है। इस प्रकार आगामी 5 वर्ष तक 5-5 करोड़ वानिकी विकास के लिए दिए जाएंगे।

समारोह में मावली विधायक दलीचंद डांगी ने पूर्व में दिए 20 लाख के अतिरिक्त 10 लाख रुपये प्रतिवर्ष दिये जाने की घोषणा की। सांसद अर्जुनलाल मीणा ने भी 10 लाख देने की घोषणा की है।

प्रारंभ में स्वागत उद्बोधन में उपवन संरक्षक ओ.पी.शर्मा ने बताया कि 165 हैक्टेयर प्रकृति की गोद में विस्तारित राजस्थान का पहला बायोडायवर्सिटी पार्क बनेगा। यहां एडवेंचर स्पोर्ट्स, जलमृदा संरक्षण, एनीकट, पिकॉक ट्रेल, विभिन्न वानस्पतिक प्रजातियां, पशु पक्षी आदि की जानकारी विद्यार्थियों एवं आमजन को मिल सकेंगी। एडवेंचर स्पोर्ट्स की आय से पार्क का विकास एवं संधारण का कार्य संभव हो सकेगा। यहां बच्चों के लिए स्पोर्ट्स एवं शिक्षण भी आकर्षण के केन्द्र रहेंगे।

समारोह में जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, विधायक फूलसिंह मीणा, दलीचंद डांगी, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, उप महापौर लोकेश द्विवेदी, प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ.एस.एस.चौधरी, समाजसेवी दिनेश भट्ट, प्रमोद सामर, बड़गांव प्रधान खूबीलाल पालीवाल, मुख्य वन सरंक्षक राहुल भटनागर, आईपीएस मथारू, शिखा मेहरा सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

स्मृतियों के शिखर (4) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जब अम्बू शर्मा ने मेरी मृत्यु पर पोस्टकार्ड लिखा

दूर दर्शन से, नजदीक मिलने से, पत्राचार से, पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कथन पढ़ने से, लिखा साहित्य पढ़ने से या फिर किसी से सुनने, जानकारी प्राप्त करने से कोई लेखक किसी लेखक से परिचित होता है। यह परिचय कई बार घनिष्ट से घनिष्टतर, घनिष्टतम हुआ मिलता है और कई बार क्षणिक पानी के बुदबुदे की तरह हुआ, नहीं हुआ होकर हवा हो जाता है लेकिन अम्बू शर्माजी का मेरा परिचय पिछले तीस वर्षों से बड़ा 'नेड़ा' बना हुआ है। मुझे यह कहने अथवा लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ी बतर्ज 'थोड़ा नेड़ा बसोनी म्हारा राम रसिया' भजन-पंक्ति की तरह 'थोड़ा नेड़ा बसोनी म्हारा अम्बू नैणस्या।' नैणसी के अम्बूजी नजदीक आ बसो।

शर्माजी से मेरा परिचय का माध्यम उनके द्वारा संपादित प्रकाशित नैणसी ही रहा। मेरे संग्रेह में उनके लिखे तीस पत्रों में दो को छोड़ शेष सभी पोस्टकार्ड हैं। पहला पत्र उन्होंने मुझे 27 नवम्बर 1983 को लिखा। यह पत्र क्या पूर्वभास देता है, मैं नहीं समझ पारहा हूं लेकिन उनके द्वारा लिखी गई मेरी प्रशस्ति ही मुझे लग रही है जिसमें उन्होंने लिखा-

डॉ. महेन्द्रजी भानावत के करकमलों में अशेष श्रृद्धा सहित तर्क और कारणों से परे, कोई अभाषित ललक आपके दर्शनों के लिए जागरित होगई थी 15-20 वर्षों पूर्व ही। आपके पत्राचार ने, नेणसी में छपी आपकी रचनाओं ने तथा सभी समागत सूचनाओं ने आपकी विद्वता, आपकी ध्येय निष्ठ तपस्या और विश्वस्तर पर अर्जित हुईआपकी लोककला-प्रतिष्ठा ने उस ललक-लौ को मुहुर्मुहु वृद्धिंगत ही किया है। हे अग्रसर! सांसारिक मोहग्रस्तता के दुर्जय झांझावत में कहीं आपका एक-आध पदचिन्ह भी अनुसरण हेतु, दृष्टिगत हो पाया तो नैणसी भी इस मर्त्यलोक में कभी विग्रह-सम्पन्न हुआ था, यह अहैतुक कर्तव्य-बोध, उसको जन्मांतरों तक संतुष्टि प्रदान करता रहेगा।

कृपाकांक्षी
अम्बू शर्मा

अम्बू शर्मा के पिछले सभी पत्रों में बवर्ण की मात्रा बड़ी है, छोटी (बु) नहीं लेकिन गत दो वर्ष से वे अब छोटी लिखने लगे हैं। लगता है वे ज्योतिष में विश्वास रखते हैं और किसी ज्योतिषी ने यह सुझाव उन्हें दिया हो। मुझे तो उनका अम्बू नाम घर का नाम लग रहा है। ऐसे मेरे अन्य मित्र भी हैं जिनका साहित्यिक परिवेश में जो नाम चर्चित है, वस्तुत: वह नाम उनकी नौकरी-पेशा का नहीं है। उन्होंने एक पत्र मुझे अंग्रेजी में लिखा। शेष सारे कार्ड हैं जो या तो हिन्दी में या फिर राजस्थानी में लिखे हैं।

वे मुझे 'नैणसी' भेजते रहे और मैं उन्हें 'रंगायान' भेजता जो भारतीय लोक कलामंडल से मेरे संपादन में प्रकाशित था। यह सुखद प्रसंग ही है कि अम्बूजी का जन्म भी नवंबर में हुआ और मेरा भी इसी माह का है। उन्होंने पहली नवंबर 1934 में जन्म लिया जबकि मैंने तेरह नवंबर 1937 को अपनी आंखें खोली। इस दृष्टि से अम्बूजी मेरे अग्रज ही हैं।

अम्बू शर्मा के पत्र कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। वे आत्मीयता और पारिवारिकता से लबालब हैं तो कृतज्ञता ज्ञापित करने वाले भी हैं। शोधपरक महत्वपूर्ण जानकारी देनेवाले हैं तो लेखन के, कथन के संबंध में सार रूप टिप्पणी करनेवाले भी हैं। सुझाव देनेवाले हैं तो अपने लेखन, उसके प्रकाशन और प्रसारण की खबर देनेवाले भी हैं। उन पर लिखी किसी बात पर मेरे द्वारा दी गई टिप्पणी पर वे बेबाक अपनी राय देनेवाले भी हैं तो मेरे द्वारा लिखी गई किसी घटना या टिप्पणी से अपनी सहमति, असहमति देनेवाले भी हैं। लिखने में वे बेबाक हैं, निर्भय और निडर। लिहाजबाजी उनमें नहीं है। वे इसकी भी चिंता नहीं करते कि उनके लिखने से कोई नाराज हो जायेगा या विपरीत असर पड़ेगा। वे बड़े संवेदनशील हैं। दुख-सुख में पूरी भागीदारी निभानेवाले हैं। कभी उन्होंने कोई चीज गलत छपगई तो उस पर ध्यान केन्द्रित कर शुद्ध और सही पर ध्यान दिलाया तो कभी अपने प्रवास की घटना लिखी। उस प्रवास की उपलब्धियों की खबर देने के साथ ही अपने परिजनों का परिचय भी मुझे लिख भेजा।

उनके लिखे ऐसे पत्र भी हैं जिनमें मुझे नैणसी में रचनाएं भेजते रहने का आग्रह किया और बढ़ती उम्र में पत्र ही अच्छे साथी और सहारा होते हैं, लिखकर पत्र लिखने का क्रम बनाये रखने का सुझाव दिया। मैं भी उन्हें उसी तरह पत्र लिखता रहा और वे सब बातें लिखता रहा जो कोई खास महत्व की नहीं होतीं और जिन्हें हम 'हिंगनी मूतनी' बातें भी कह सकते हैं पर जहां मिलन की, घनिष्ट होने की, मैत्री और पारिवारिकता की मैत्री होती है वहां ऐसी महत्वपूर्ण नहीं कही जाने वाली बातें भी महत्वपूर्ण और आत्मीयता का दरसाव देनेवाली होती हैं।

मेरी भानावत गोत्र से संबंधित उन्हें जो जानकारी मिली उसकी उन्होंने बड़ी महत्वपूर्ण जानकारी मुझे लिख भेजी। 28 दिसंबर 1994 के कार्ड में उन्होंने लिखा- '' लेखन भी कितना भटकावपूर्ण कार्य है कि प्रारंभ के 4-5 पृष्ठ तो झुंझणु ग्राम के वर्णन में ही व्यय होगए। इतने में ही एशियाटिक सोसायटी के राजस्थानी सूचीपत्र के क्रम 356 (473) पर एक पुस्तक 'झालां रा गीत' के कवियों में हरिदासजी भानावत का नाम आगया सो आपकी याद हो आई कि आप से पूछं कि क्या आपके पूर्वजों का संक्षिप्त इतिहास आपने छपवाया है जिनमें हरिदासजी जैसे महान डिंगल कवि भी हुए?''

मैंने इस संबंध में उन्हें पूरी जानकारी लिख भेजी कि हमारे ओसवालों में भानाजी हुए। हमारा वंश उन्हीं से चला। मैंने यह भी लिखा कि अन्य जातियों में भी यह गोत्र विद्यमान है। इस पर उन्होंने बसंत पंचमी 2051 को कार्ड में लिखा- ''आप तो लोकप्रचारक हो सो तीर्थां अर दूजै स्थानां पर जाय-जाय कर आखो भारत खंगालता फिरो हो। इतणो गाड़ी-गाड़ो कठास्यूं ल्यावो अर फेर भी इतणो समय कठास्यूं पावो कै अखबारां में लिखो, ग्रंथ लिखो अर म्हां जिस्या नै परामर्श प्रधान मार्गदर्शक कागद भी लिखो।'' और लिखा- '' भानावत भीलां में है अर दूजां में भी है सो जाणकारी आपस्यूं मिली। एशियाटिक सोसायटी में कविता रे विषय भी वीर-भानावत हुयो है अर कवि भी भानावत है सो उण में भी कई जात अर गौत्र हुसी।''

अपने पुत्र मुक्तक (26) के निधन के समाचार मैंने अम्बूजी को भी दिये। इस पर गणेश चतुर्थी, 12 सितंबर 1991 को लिखा- '' एक कूं-कूं पत्री भी जिकी आप म्हानैं आपरै किणी टाबर रै ब्याव री भिजवाई थी उण में ' मुक्तक ' नाम नयो अर स्मरण में कठिन लाग्यो थो। अर दूजी शोक-पत्री आ है जिण में परमात्मा मुक्तक जिसै होणहार बाळक नैं आपस्यूं छीन लियो। डाक मेरी पत्नी खोले अर अक्षर जोड़-जोड़ कर धींरै-धींरै बांचै। मैं स्कूल स्यूं आयो तो रोवती मिली। थोड़ी ताक पछै बतायो कै थारैं किणी साहित्यकार मित्र रो जुवान लाडेसर चल बस्यो। मेरो रोवणो भी रूक्यो कोनी। यूं ठा पड़ै के साहित्यकार पत्राचार स्यूं घर री अपढ़ लुगायां में भी किसी आत्मीयता जागरित हो जावै। ओपाजी (1752-1843) ने ठीक ही लिखा-

''नर री चींती बात हुवै नहीं / हर री चींती बात हुवै।'' अर्थात् नर चाही होती नहीं / हर चाही तत्काल हो जाती है।

अम्बूजी ने मुझे अपनी लिखी युद्धकांड तथा उत्तरकांड पुस्तकें भेजीं। मैंने आभार स्वरूप पत्र लिखा जिसके उत्तर में उनका 25 नवंबर 1994 को कार्ड मिला। इसमें उन्होंने लिखा- ''आप दो बात लिखी (1) रामायण लिखणै स्यूं जीवण री सार्थकता बणी अर (2) अमर-पद मिल्यौ। मैं आपरो चिर कृतज्ञ, सदा स्यूं ही हूं कै रामजी री कृपास्यूं म्हानैं आप जिसा हेतालू मिल्या।'' अपने 16 जुलाई 2006 के कार्ड में भी भावुकतापूर्वक उन्होंने लिखा- '' 11.7.2006 नै गुरु पूर्णिमा ही। आप भी सदा ही चोखी शिक्षा दी सो विशेष नमन। ... मैं 1.11.06 नैं 73वें में प्रवेश करुंगा अर आपरी 73 पोथियां री नामावली मिली। आश्चर्य है कै इतणी बेसी पोथियां अन्य व्यक्ति तो कोनी लिख पावै। ... आप री प्रतिभा, श्रम अर मेरे प्रति स्थाई स्नेह हेतु बारम्बार आभार!''

यह नई बात नहीं है कि अपने समय के लेखक ही अपने समानधर्मी रचनाकार का ठीक से उल्लेख नहीं कर पाते। ऐसा भूलवश तो हो ही जाता है पर कभी-कभी कुछ अन्य कारणों से भी उसे उल्लेख विहीन कर दिया जाता है। डॉ. हीरालाल माहेश्वरी ने अपने इतिहास में अम्बू शर्मा को याद नहीं किया, इसका भारी अफसोस अम्बूजी को रहना स्वाभाविक है। यह आक्रोश उन्होंने नैणसी में तो दिया ही, मित्रों को भी लिख भेजा। मुझे भी लिखा- ''आप से भूत-विद्या सीखने प्रयाग से और सामुद्रिक शास्त्र में शारीरिक लासण-चिन्ह सीखने विदेशी जिज्ञासु आए, जानकर ही आश्चर्य होता है कि विद्वान क्यों सर्वत्र पूजनीय है। मुझे भी यदाकदा आपने ही पुजवाया है नहीं तो हीरालालजी माहेश्वरी ने तो अपने इतिहास (15.5.1980) में हमें मृत घोषित कर दिया है।''

इस पत्र के जवाब में मैंने उन्हें लिखा कि जानबूझकर ऐसा उन्होंने नहीं किया होगा। आप व्यर्थ में उनके प्रति ऐसी धारणा न बनायें। अपने 6 जून के लिखे पत्र के उत्तर में उन्होंने 11 जून 1996 को लिखा- ''आपकी कृपा-लिपि में सद् शिक्षा यह है कि माहेश्वरीजी वाली बात को अब मन से विस्मृत कर देना चाहिए और रामायणकार के पास तो अमृत के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता। यह आत्मीय प्रोत्साहन आपके अतिरिक्त किसी अन्य ने कभी दिया नहीं, देता नहीं, दे नहीं सकता। इसीलिए आपके पत्रों की ललक भी रहती है तथा उन्हें मैं सहेज कर भी रखता हूं।''

अपने अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के स्वर्गवास पश्चात हमने उनके व्यक्तित्व-कृतित्व को दर्शाता 'नमन' नामक स्मृति ग्रंथ प्रकाशित किया। इसकी प्रति अम्बूजी को भेजी गई। ग्रंथ की प्रतिक्रिया स्वरूप उन्होंने बड़ा दिन, शुक्रवार 25 दिसंबर 1998 को मुझे लिखा- ''इसे ध्यान मग्न होकर पढ़ रहा हूं क्योंकि शैली और सामग्री दोनों ही रूचिकर है, नवीन है, ज्ञानवर्धक है और आप दोनों भाइयों की वीरता की कहानी है। आपकी मातुश्री आप दोनों से भी अधिक वीर थीं अत: उनको अशेष प्रणाम।'' साथ ही लिखा- ''पारिवारिक सामग्रियों को इतनी सूक्ष्मतापूर्वक संजोना और समुचितरूपेण प्रस्तुत करना इस विशाल ग्रंथ की गरिमा में वृद्धि करता है। इस ग्रंथ के बिना नरेन्द्रजी का विराट व्यक्तित्व ओझल ही रह जाता। वे विद्वान थे। सच्चे श्रमण थे और कर्मठतापूर्वक स्वावलम्बी तथा सर्वप्रिय थे। विरले ही ऐसा भव्य व्यक्तित्व धारण कर पाते हैं।''

मैंने एक ग्रंथ डॉ. नरेन्द्र व्यास से संबंधित 'आदिम गंध के अध्येता' नाम से लिखा। डॉ. व्यास आदिवासी जीवनधारा के गहन अध्येता हैं और राजस्थान के आदिम जाति शोध संस्थान के निदेशक पद से सेवानिवृत्त हुए। यह ग्रंथ मैंने अम्बूजी को भेजा। पूरे ग्रंथ को मनोयोग से पढ़कर उन्होंने एक अत्यन्त ही सूक्ष्म किंतु महत्वपूर्ण गलती की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया। यह त्रुटि मात्र एक बिन्दु की थी।

बिन्दु के महत्व पर सबसे अच्छा दोहा बिहारी का लिखा पढ़ा था- 'कहत सभी बैंदी दिए अंक दस गुना होय' मगर यहां वह स्थिति नहीं थी। मैंने संस्कृत का अध्ययन नहीं किया और यदि कर भी लेता तब भी शायद ही यह त्रुटि जाने से रह पाती। अम्बूजी ने बड़े विनीत भाव से, क्षमायाचना सहित इस त्रुटि की ओर हमारा ध्यान दिलाया। लिखा- ''सामग्री में प्रत्येक पृष्ठ अत्यंत उत्तम,, पठनीय एवं संग्रह-सुयोग्य है। प्रूफ रीडिंग में एक प्रतिशत से भी कम भूले हैं अत: मेरे ज्ञान के लिए ही संकेत कर रहा हूं, क्षमा करिएगा- पृष्ठ 151 पर भूपाल जन्मोत्सव : रचयिता मोहनलालजी शास्त्री ने लिखा- गुण-गण प्रणय वंशवध अर्थात् मैं गुणों को प्रेम करने वाला हूं। मेरे संबंध में ऐसा कहा जाय।''

राजस्थान के प्रथम विधानसभा स्पीकर नरोत्तमलालजी जोशी ने भी काशी से संस्कृताचार्य की उपाधि ग्रहण की थी। वे झुंझुणू के हमारे कुटुम्ब में ही थे।

उनके पत्रों की फाइल (दूसरों को लिखे) मेरे पास अब भी सुरक्षित है। वे पत्र के नीचे लिखा करते थे- विदुषां वशंवद अर्थात् 'श' पर अनुस्वार है, व पर नहीं अर्थात् मैं विदुषों के वश में हूं, ऐसा मेरे संबंध में विरुद प्रचारित हो अर्थात् इस पदावली में वंश=कुटुम्ब का कोई प्रसंग नहीं है। वश = प्रेम = अधिकार इत्यादि स्वामीत्व का है। सो संभवत: प्रूफ में भूल है कि 'श' की बिन्दी, एक वर्ण पहले चली आई और 'व' पर लग गई।'' (18 जून 2008 का पत्र)

लेकिन अम्बूजी के लिखे उन सारे पत्रों में मेरे लिए वह पत्र अधिक महत्वपूर्ण बना हुआ है जिसे मैं जीवितावस्था में देख-पढ़ रहा हूं कारण कि अम्बूजी द्वारा वह पत्र मुझे मेरी ही शोकाभिव्यक्ति के लिए लिखा गया था। कभीकभाक ही ऐसा होता है और ऐसे होने को हमारे यहां मांगलिक ही समझा गया है। कार्ड मिलने पर मैंने अम्बूजी को फोन किया कि मैं स्वयं उदयपुर से बोल रहा हूं और पत्र लिखकर आपने मेरी उम्र बढ़ा दी है सो शुभ ही है। वे अचानक मेरा फोन पाकर सकपका गए। मैंने फोन रख दिया।

मेरे कई मित्र ऐसे हैं जिनसे दीर्घकालीन परिचय है, गाढ़ी मैत्री भी है किंतु मैं उन मित्रों के अन्य परिजनों से कतई परिचित नहीं हूं। थोड़ा-बहुत परिचय है भी तो वह अनजाने जैसा ही है। विगत वर्षों में उन मित्रों में से कुछ अब इस संसार में नहीं हैं तब स्वाभाविक है, मैं चाहते हुए भी उनके परिजनों से नहीं मिल पाया। परिचय उन्हीं से था। मैत्री उन्हीं से थी। गप्पबाजी उन्हीं से थी। अन्यों से हमने परिचय-प्रगाढ़ का दायरा विस्तृत, घनिष्ट या कि परिजनवत बनाया ही नहीं था।

लेकिन अम्बूजी के साथ मैंने कुछ अलग ही रिश्ता पाया हालांकि अभी भी मैं उनके किसी परिजन से परिचित नहीं हूं और न वे भी मेरे परिवार के किसी सदस्य से परिचित हैं तब भी उन्होंने जो पत्र लिखा उससे उनका आत्मीय लगाव, एक मित्र या कि अपने आत्मीयजन के नहीं रहने का गम जिस रूप में अभिव्यक्त हुआ है उससे मेरे प्रति, मेरे परिजनों के प्रति सहानुभूति और सौहार्द का गहन रिश्ता ही अटूट हुआ मिलता है। यहां मैं वह पूरा पत्र ही खोल रहा हूं जो उन्होंने शनिवार 10 सितंबर 2005 को लिखा था।

(शेष पृष्ठ सात पर)

पोथीखाना

परंपरा को समझने की परंपरा में 'पंरपरा का लोक'

-बसंत निरगुणे-

'परंपरा का लोक' पुस्तक पढ़ते हुए कुछ इस तरह अनुभूति होती रही कि पचास वर्ष पूर्व लिखने वाले लोगों के मन में परंपरा को जानने, समझने और लिखने की जो एक सगी जिज्ञासा थी, वह आज के लेखकों में कतई दिखाई नहीं देती है। उस समय लोकसंस्कृति और साहित्य पर लिखने वाले लोग भी कम थे। समझ वाले तो और भी कम थे। लगभग एक सदी पहले से लोकसाहित्य के लेखन की नींव देश में पड़ चुकी थी। तब केवल अध्येता-लेखकों का ध्यान संकलन और विश्लेषण पर अधिक था। पं. रामनेरश त्रिपाठी, झवेरचंद मेघाणी, शंकरलाल यादव, देवेन्द्र सत्यार्थी, गणेश चौबे, कृष्णदेव उपाध्याय, राहुल सांकृत्यायन आदि की एक पीढ़ी इस क्षेत्र में कार्य कर चुकी थी।

लोककलाओं के क्षेत्र में राजस्थान में देवीलाल सामर और उदयशंकर जैसे लोगों ने 'प्रयोग और प्रस्तुति' का कार्य करना शुरू कर दिया था। सामरजी ने कठपुतली को नया जीवन दिया और उदयशंकर ने लोकनृत्यों की ऊर्जा से 'भारतीय बैल तैयार कर दी थी। ऐसे में देश में हर जगह की पारंपरिक कला और साहित्य खासकर वाचिक परंपरा के संकलन और प्रस्तुतिकरण की ओर नये अध्येताओं का ध्यान गया।

इनमें राजस्थान में डॉ. महेन्द्र भानावत जैसे जमीनी अध्येता आये। भानावतजी ने सामरजी की बुनियादी समझ लेकर संकलन और लिखने का राजस्थानी भाषा, कला और साहित्य का प्रथम कार्य शुरू किया। और भी कई अध्येता आए। उनमें मालवा से श्याम परमार, चिंतामणि उपाध्याय, बसंतीलाल बम, निमाड़ से रामनारायण उपाध्याय, उत्तरप्रदेश से विद्यानिवास मिश्र, विन्ध्यवासिनी देवी आदि अनेक लोक को समर्पित लोग आये। उन्हीं में मालती शर्मा भी ग्वालियर से ब्रज भाषा संस्कृति के संकलन संवर्धन का कार्य करने के लिए मैदान में आई थी। उनका कार्य क्षेत्र पूना रहा लेकिन उनकी पूरी ऊर्जा ब्रज भाषा और संस्कृति रही। महाराष्ट्र की पारंपारिक कलाओं को भी वे अपने लेखन में शामिल करती गई जिससे उनकी ब्रज और मराठी संस्कृति में तुलनात्मक दृष्टि बनी।

भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर से 'रंगायन' का निकलना मालतीजी के लिए वरदान सिद्ध हुआ। संपादक थे डॉ. महेन्द्र भानावत जिन्होंने गवरी लोकनाट्य पर राजस्थान में पहला शोधकार्य करके लोकसाहित्य में पहली पीएच.डी. पाने का गौरव प्राप्त किया था। उनके संपादकत्व में उनके प्रेरणा स्रोत देवीलाल सामर स्वयं लोककलाओं पर सारगर्भित और सार्थक लेख लिखते थे जिनसे कई लोग ऑक्सीजन ग्रहण करते थे। मालतीजी भी उनमें से एक थी। भानावतजी ने भी उनका कोई लेख वापस नहीं किया। तभी वे पुस्तक में लिखती हैं- 'आगरा के युवक' मासिक के नवंबर 1960 के अंक में छपे मेरे लेख 'सांझी के गीत' के बाद 'रंगायन' में मेरे लेखन के प्रकाशन का अटूट सिलसिला चला। 'रंगायन' के माध्यम से ही डॉ. भानावतजी ने मुझे और न जाने कितने लेखकों को लोकसाहित्य जगत में स्थापित किया। मुझे तो वे ही लाए। जो भी लिख भेजती वह छपता। आज तो उस सबको देख मुझे खुद भी थोड़ा आश्चर्य है कि क्या उस कच्ची उम्र में मैंने ही यह सब लिखा था।

इतना तो सुनिश्चित है कि उस समय मालतीजी जो कुछ भी लिख रही थीं खुद भी परंपरा, संस्कृति और वाचिक साहित्य का अर्थ समझ रही थीं और उस अर्थवत्ता को पाकर धन्य हो रही थीं। उनके सामने जैसे 'सारा लोक' खुल गया था। सन् 1970 से लगाकर 1994 तक मालतीजी बिना रूके 'रंगायन' में लिखती रहीं। भानावतजी ने उन्हीं लेखों को समयोचित करते 'परंपरा का लोक' नामक पुस्तक को आकार दे दिया। कुछ नये लेख भी उसमें डाल दिये ताकि पाठकों को यह लगे कि मालतीजी के लेखन की रसवंती धार अधिक उम्र होने के बाद भी सूखी नहीं है।

असल बात यह है कि रंगायन में पढ़ते हुए मालतीजी के लेखन से मैं भी प्रेरणा पाता रहा हूं। पत्र-परिचय होने पर मुझ पर छोटे भाई का प्यार वे लुटाने लगी थीं जो आज तक कायम है। शायद जन्म-जन्मान्तर का कोई पवित्र रिश्ता मेरा उनका रहा है अन्यथा आज कोई किसको इतना निर्व्याज स्नेह देता है क्या। पत्र-परिचय के लगभग पच्चीस-तीस वर्षों बाद मेरी उनसे पहली मुलाकात भोपाल में मेरे घर पर हुई थीं। वे उस छोटे भाई के घर-परिवार में सबसे मिलने आई थी। खूब आशीर्वाद बरसा गई। फिर तो कई कार्यक्रमों में मिलने का जैसे सिलसिला ही बन गया था। एकबार मुझे पूना जाने का सपत्नीक अवसर मिला। मैं तो उन्हीं घर पर ठहरा था। तब उनके पति मिसाइल वैज्ञानिक डॉ. कृष्णचंद्र शर्मा और छोटे बालक नीरज से भेंट हुई थी। यह आश्चर्य ही था कि एक वैज्ञानिक परिवार में 'लोक की गंगा' भी बह रही थी। घर में लोकगीतों सा पवित्र वातावरण था।

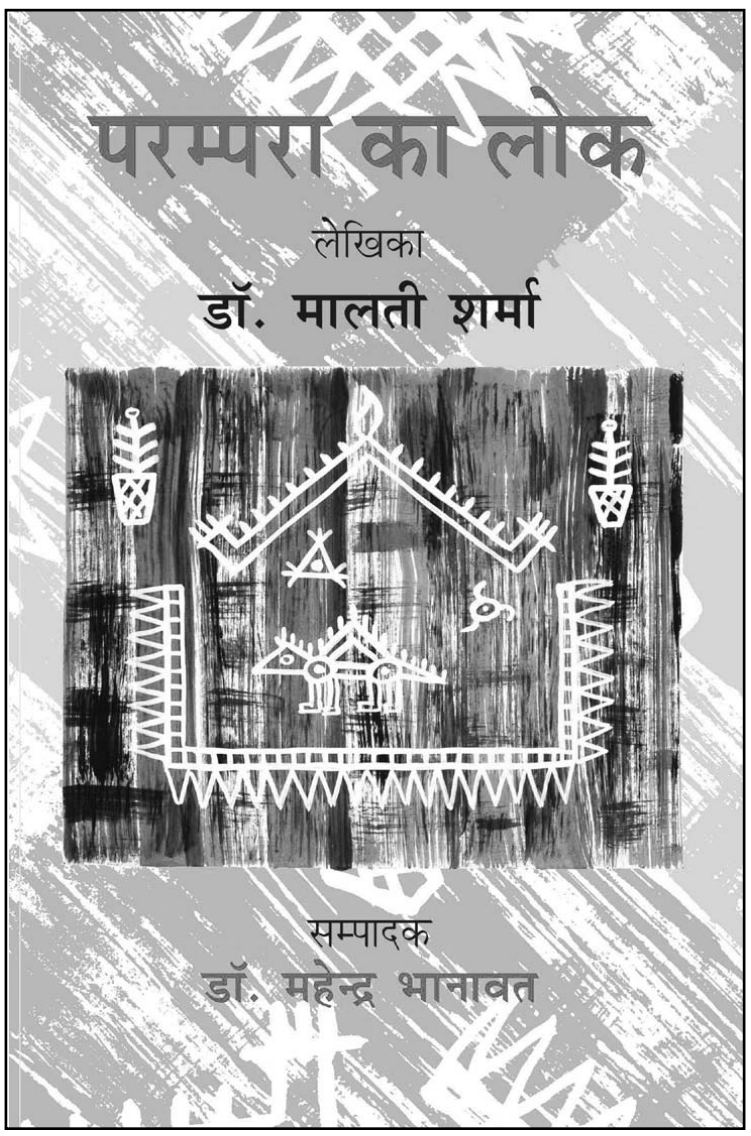

डॉ. मालती शर्मा ब्रज लोकगीतों की मात्र संकलनकर्त्ता ही नहीं बनी रहीं। वे लोकगीतों की भावधारा की प्रबल व्याख्याकार भी थीं। मैंने महसूस किया कि मालतीजी वर्णनात्मकता के बीच में लोक की आत्मा की व्याख्याकार भी बन जाती हैं। तब वे साधारण से असाधारण लेखिका बन जाती हैं। बात करते-करते जैसे कोई 'कहावत' सी हो उठती हैं।

मैंने महसूस किया कि जबसे मालतीजी के संपर्क में आया तब से एक ही बात पाई कि उनके भीतर और बाहर में अद्वैत है। उनमें लोक धरोहर के प्रति बच्चों के समान छूने, महसूस करने और व्यक्त करने की ललक है। व्यक्त करने की सिर्फ ललक ही नहीं, उसे उज्ज्वल धवल चांदनी की तरह फैलाने की चाह भी है।

एक तो स्त्री ऊपर से जब उसे अतिभावुक मन मिल जाता है तब जीवन की सारी परिभाषाएं बदल जाती हैं। फिर उसका मन लोक की समष्टि को छूने लगता है। फिर उसे सारी सृष्टि अपना घर लगती है। अंतरिक्ष घर का एक कोना दिखता है। सबके प्रेम में वह अपने को ढूंढ़ने लगती है। मैंने मालतीजी के मन को लोक के समान ऐसा ही पवित्र, निर्मल और व्यापक पाया है। ऐसा कहते हैं- जहां तक मन जाता है, वह 'लोक' है। मालतीजी लोक की आख्यायिका हैं। लोक का मन हैं। उनका बस चले तो लोक की शक्ति दिखाने के लिए जहां तक शब्द और उनके अर्थ जाते हैं, वहां से भी आगे लोक को ले जाने की कोशिश में लगी रहें। लोक की अनंत यात्रा के लिए उनका मन थका नहीं है।

संपादक डॉ.महेन्द्र भानावत 'रसवंती लेखिका की कमलांकित कलम' में मालतीजी के इन लेखों के बारे में लिखते हैं- मालतीजी द्वारा लिखित ये लेख किसी एक दिशा, एक दृष्टि, एक विषय, एक विन्यास, एक शिल्प, एक शैली, एक बोध, एक लोकाचार, एक मत, एक रंग, एक छवि, एक मंतव्य के सूचक नहीं हैं और न किसी एक ही लेखन सांचे से आबद्ध हैं। सब अपने में विविध हैं। डॉ. भानावत ने मालतीजी के लेखों के बारे में जितने भी 'एक' लगाने थे, लगा दिये। मैं ऐसा मानता हूं कि मालतीजी के मन की विराटता ही लोक की विराटता की छोटी-छोटी आख्याएं हैं। शून्य कितनी भी छोटी हो सकती है, लेकिन उसमें विराट की सृष्टि छिपी होती है। यही कारण है कि एक विचार, एक प्रेरणा, एक भाव मनुष्य की दुनिया बदल देता है।

'एक-एक में अनेकांत और अनेकांत में एक-एक' समाने का भाव ही मनुष्य को ईश्वर की परिकल्पना तक ले जाता है। संभवतया मालतीजी की प्रारंभिक शब्द यात्रा भी हमें बहुत बड़ा और पुष्ट प्रमाण दे जाती है। वह यात्रा कभी समाप्त नहीं होती और जहां से उसका अंत होता है वहां से एक नई यात्रा शुरू होती है। इसीलिए मृत्यु में एक नये जन्म की आशा भी समाहित होती है। जीवन का रहस्य भी यही है। जीवन के अंतिम पड़ाव में मालतीजी नये जीवन की व्याख्या में लगी हैं। वे कविता में जीने लगी हैं। वे मुझसे फोन पर कहती हैं- जब नींद की बेहोशी टूटती है, तब मेरे जहन में कविता उतरने लगती है। आजकल प्रतिदिन वही होता है। मैं सोचता हूं स्मृतियों का कविता में उतर आना अथवा स्वयं कविता हो जाना कितना बैचेन कर देने वाला हो सकता है। मालतीजी इसका उदाहरण हैं।

'ओक से लगाकर लोक तक' लिखने के लिए मालतीजी के समक्ष अनेक विषय थे। उनके आसपास और संस्कारों में बसे ब्रज मंडल की अनेक छबियों के साथ देश की परंपराओं के विशाल फलक पर लेखनी चलाने के लिए उनके पास खुला अवसर था। इसलिए उन्होंने विषयों की विविधता को अपनाया और निरंतर शोध, संकलन और लेखन की कठिन कार्य प्रणाली को विकसित किया। जहां उन्हें लिखने की सामग्री मिलती वहां पहुंचकर उस विधा की पूरी जानकारी लेकर लेख लिखने वाले ऐसे लोग भी उस समय देश में कम ही थे।

मालतीजी लोक की, खुली आंखों वाली अध्येता लेखिका रहीं। जहां जाती उनकी नजर लोक की रीति-नीति, प्रथा-परंपरा, आस्था-अनुष्ठान, पर्व-त्योहार, ग त्-ग तु, गीत-कथा, व्यथा-गाथा, गान-आख्यान, चित्र-मूर्ति-शिल्प के सौंदर्य पर पड़े बगैर नहीं रहती। पैदल चलने में, समूह में बैठने में, बस-रेल यात्रा में जाने-अनजाने लोगों से बतियाते मालतीजी की लोक संज्ञान पिपासा कभी थकती नहीं। आज भी उनका मन एक शब्द, एक परंपरा, एक गीत, एक कथा, एक कहावत, एक पहेली, एक चित्र, एक अनुष्ठान, एक पर्व, एक त्योहार, एक लोक मंगल विचार पाकर बच्चों जैसा पुलकित हो उठता है और वे उसे लिखकर ही दम लेती हैं।

उन्हें लोक की इस धरोहर को सिमटते और मिटते देखकर दुख होता है। वे यह जानती हैं कि समय का प्रभाव लोकसंस्कृति, कला और साहित्य पर भी होना ही होता है। वे अपने समय में बदलती हैं। वे अपने समय की प्राणवायु ग्रहण करके ही जीवित रहती हैं। इसलिए वे कल्पनाओं की शुद्धतावादी विचारधारा की प्रारंभ से ही खिलाफ रही हैं। वे कहती हैं- जन इतना मूर्ख नहीं है, जितना ये तथाकथित कला उद्धारक समझते हैं। कल्पनाओं और लोककलाओं का अस्तित्व जीवन सापेक्ष है, जीवन निरपेक्ष कदापि नहीं। लोकरूचि के बावजूद भी दोनों तरफ के शुद्धतावादियों से लोककलाओं के पुनरूजीवन के लिए आज भी खतरा है।

मालतीजी के लेखों के शीर्षकों से उनके अध्ययन की विविधता की पहचान से उनके सूक्ष्म दृष्टिबोध की प्रतिष्ठा होती है। लोककलाएं : संभावना एवं प्रक्रिया की दिशा, लोकगीतों का रीतता हुआ संदर्भ, अकेला दीप रातीजगा का, गालियों की गीत गंगा, लोकव्याधि नजर, लोकमानस में यौन अवधारणा, गौना : यौवन का मदनोत्सव, बिन पानी सब सून, लोकगीतों में पर्यावरण चेतना, लोकाचारों मे अन्न आदि लेख इस बात का संकेत देते हैं कि चेतना के स्तर पर मालतीजी का लेखन समय, समाज और संस्कृति की धुरी पर केंद्रित रहा है और आज भी वे इसकी चिंता करती हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 1 मार्च 2016

न्याय के लिए तंत्र से तनातनी

लोकतंत्र में लोक सर्वेसर्वा और प्रभावी होता है किंतु कई बार तंत्र लोक पर अधिक हावी हो जाता है। इससे बैचेनी बढ़ती है साथ ही लोक और तंत्र दोनों पर मानसिक आघात लगता है। ऐसा भी होता है जब लोक उग्र हो जाता है तब शक्तिपुंज तंत्र को भी नकारता हुआ लगता है और अपनी मांगों को मनवाने के लिए हिंसक प्रवृत्तियों पर उतारू हो जाता है। तंत्र भी तब अपनी प्रतिष्ठा की रोटी सेकने के अहम में कुछ भी सुनता नहीं है। नतीजा अंत में महान हानि झेलने का होता है। तोड़फोड़ और आपसी तनातनी के चलते लोकतंत्र घुन की तरह पिसता है तो तंत्र को भी आराम से नहीं रहने देता है।

अपनी न्याय प्रक्रिया को ही लें। यों तो लोक का तंत्र जो भी करता है लोक के कल्याण के लिए, उसकी उपादेयता के लिए, उसके अमन चैन के लिए करता है। उसी के लिए संवैधानिक रूप से संकल्पित भी होता है। चुनाव में राजनैतिक दल अपने घोषणा पत्रों में भी लोकलुभावने वादे करते हैं किंतु बाद में सत्ता के मद में वे सब वादे बिसरा दिये जाते हैं। तब जनता बिचारी हो जाती है लेकिन जब उसकी बारी आती है तब वह देख लेती है। तंत्रासीन लोगों को धूल चटाने में भी कोई कसर नहीं रखती।

अब देखिये न। उदयपुर में हाईकोर्ट बैंच की स्थापना के लिए संघर्ष करते-करते 35-40 वर्ष हो गये हैं। जब भी चुनाव आते हैं, हर दल वादा करता है लेकिन वही ढाक के तीन पात। कई बार न्यायिक कर्मचारियों का प्रदर्शन सारी सीमाएं तोड़ता लगता है। पिछले दिनों सीएम का पुतला फूंका गया। यहां तक तो ठीक था पर न्यायालय परिसर से जो शवयात्रा निकाली गई, उसे देख जहां-जहां से वह यात्रा गुजरी, लोगबाग उसे किसी का असली मरण ही समझ बैठे। एक कर्मचारी अपना सिर मुंडाकर यात्रा में सबसे आगे चल रहा था। उसने अपने हाथ में हांडी थामे हुई थी। मार्ग में कुछ कर्मचारी उसे गले लगाकर बिलखते मिले। यह दृश्य देख कई लोग फफक पड़े और जैसा कि अक्सर होता है लोग अपने पांवों से जूते उतार, खड़े होकर शोकमग्न अवस्था में शव को नमन करते पाये गये।

मेवाड़-वागड़ हाईकोर्ट बैंच संघर्ष समिति की बैठक में सभी जिलों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। 24 अगस्त 2014 को मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने उदयपुर संभाग प्रवास के दौरान खंडपीठ की स्थापना का आश्वासन भी दिया था। वही राजे इस बार पलटी नजर आई। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह अच्छा शकुन नहीं है। तंत्र की ऐसी निरंकुशता लोकपक्ष पर कुठाराघात ही कही जाएगी। अधिक अच्छा तो यह है कि हर संभाग मुख्यालय पर खंडपीठ हो ताकि साधारण व्यक्ति को भी शीघ्र और सहज ढंग से न्याय सुलभ हो सके।

पत्र-पिटारा

ज्ञान रंजन, लोक रंजन एवं मनो रंजन से समाहित शब्द रंजन

शब्द रंजन पत्रिका को मैंने विस्तार से देखा है। मुझे लगा कि इसमें ज्ञान रंजन, लोक रंजन, मनो रंजन तथा राजनीति से युक्त भरपूर सामग्री है। पत्रकारिता जगत में इसका प्रवेश सामाजिक सरोकारों के गवाक्षों को खोलने में समर्थ होगा और यह जनमानस के सोच को भी उद्वेलित एवं परिष्कृत करेगा।

-देवेन्द्र इन्देश

पठनीय और प्रेरक पत्र

समाचार पत्रों की भरमार, गलाकाट प्रतियोगिता और विज्ञापनी युग में शब्द रंजन अपनी अलग पहचान बनायेगा। आपकी संपादकीय में डॉ. महेन्द्र भानावतजी जैसे कौशल मठोठ के दर्शन होते हैं। स्मृतिमयों के शिखर स्तम्भ में दिवंगत लेखकों, श्री बैरागीजी का कवि सम्मेलनों पर आलेख पठनीय है। श्रुति को जैसे श्रोता मिलेंगे वैसी प्रतिश्रुति होगी उद्घोषणा उनके अर्न्तमन और प्रेरणा देने वाली है।

- रामदयाल मेहरा

श्लाघनीय प्रस्तुति

साहित्य-कला-संस्कृति से, अहर्निश अनुरंजित परिवार की
बहु प्रतीक्षित जन-अपेक्षित, श्लाघनीय, मन भावन प्रस्तुति है, शब्द रंजन।
अधुनातन नूतन पीढ़ी में, भारतीय संस्कृति का
पावन बीज वपण, संवर्द्धन-संरक्षण है, शब्द रंजन।
गीत-गजल-संगीत, साज-नर्तन, माटी, रजत, स्वर्ण शिल्प
कलात्मक अभिरूचि का, अनुबंधन है, शब्द रंजन।
जन विचार, जन आलाप, जन संवाद, जन चैतनय का
सृजन युत अभिव्यंजन है, शब्द रंजन।
कथा-लघुकथा, लेख-आलेख, संस्मरण-जीवनी-उपन्यास
डायरी-रिपोर्ताज-शब्द चित्र, छन्द-कविता-काव्य एवं
विविध विधाओं का अनुरंजन है, शब्द रंजन।

- भेरूसिंह राव 'क्रांति'

विरासत

शाकभाजियों का शहर कोल्हापुर

- डॉ. मालती शर्मा-

आज वर्षों बाद भगवती जीजी की बड़ी बेटी विमला पूना आई। वह यों कि उसके बेटे ने दिल्ली की भीड़भाड़ और तनाव भरी जिंदगी छोड़ पूना में बसने का निर्णय लिया। विमला कोडईकनाल के इन्टरनेशनल स्कूल में सैकिन्ड लेंग्वेज हिंदी की विभागाध्यक्ष थी। यहां विश्वभर से 400-500 बच्चे पढ़ने आते हैं। वर्ष 2004 में उसने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली।

मैं उसे घर में पाकर विस्मित थी। पूछा-घर ढूंढ़ने में दिक्कत तो नहीं हुई। वह बोली-चीन, जापान, अमेरिका में जब कोई कभी दिक्कत नहीं हुई तो यहाँ क्या होती, मौसी। हमारे दोपहर के खाने में बाजरे की रोटी और कढ़ी बनी थी। साथ में था बहुत ही छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा कोल्हापुर का अपने अनोखे स्वाद का गुड़। विमला को कोल्हापुर का गुड़ इतना पसंद आया कि साथ में ले जाना चाहा। मैंने डॉ. शर्मा की शिष्या डॉ. सरिता ठकार को फोन किया और गुड़ भेजने का निर्णय पा लिया।

जैसे पंजाब में गेहूं की खेती है, वैसे महाराष्ट्र के कोल्हापुर के अलावा और किसी भी शहर में इतना गुड़ नहीं बनता। नगर में घुसते ही गुड़ पकने की महक मुंह में पानी ला देती है। देवउठनी एकादशी को गन्नों से बनाए मंडप में देव जागरण का पर्व मना कर गुड़ बनाने की शुरूआत होती है।

गुड़ के साथ यहाँ की लौंग के आकार की छोटी लंवर्गा मिरची भी बहुत विख्यात है। इन दोनों की ख्याति के साथ यहां शाकम्भरी देवी भी बसती है। यह पालेभाजी पत्तीवाली सब्जियों का भी नगर है जिसमें वर्ष भर, खास तौर से बरसात और सर्दियों में यहाँ 29 प्रकार की पत्तेवाली सब्जी होती है। यों

कोल्हापुर में नव दुर्गाओं के नौ अलग-अलग मंदिर हैं पर यहाँ शाकभाजियों में शाकम्भरी देवी बसती है।

महाराष्ट्र के भोजन में भाजी होना अनिवार्य है। भाजी-भाखरी यहां दालरोटी का पर्याय है। इधर वही बहू पाककला में कुशल मानी जाती है जो एक भाजी बनाकर पूरे परिवार को मन भरा भोजन करा दे। कोल्हापुर में वर्ष भर में होने वाली भाजियों के नाम, उनके बनाने के तरीके, उनकी पौष्टिकता, बीमारियों में उनकी उपयोगिता आदि पर जानकारी का नितांत अभाव है। डायबिटीज, अर्थराइटिस आदि में इनकी औषधीय क्षमता जानना जरूरी है। लोकजीवन में तो किसी विशेष शाक को, विशेष स्थिति में, किसी विशेष नक्षत्र में खाये जाने तक की जानकारी मिलती है। मेरा स्वयं का अनुभव है कि मधुमेह में सहिजन के पत्ते, फूलों, फलियों और चौलाई का शाक खाना बहुत फायदेमंद है। नियमित लगातार सेवन से अर्थराइटिस में भी पैरों को चलायमान रखने की क्षमता है।

इन पत्तेवाली सब्जियों को महाराष्ट्र में रान (वन) भाजी कहते हैं। इन्हें वन्य शाक या वन्य सब्जियाँ कहना उचित होगा। अपने मौसम में ये अपने आप उगती हैं। जैसे गेहूँ के साथ बथुआ उगता है। पत्तेवाली भाजी सबसे अधिक बरसात में होती है। मृग नक्षत्र लगने पर यहाँ सहिजन के पत्तों की भाजी अवश्य बनाई जाती है। यह स्वाद में थोड़ी कड़वी होती है पर इसे खाने से बरसात में अक्सर होने वाली पेट की बीमारियाँ, बदहजमी, दस्त, मरोड़ आदि नहीं होतीं।

प्रसव होने के बाद प्रसूता को सामान्य स्थिति पाने के लिए पोकळा (पोला डंठल) की भाजी खिलाई जाती है। इस भाजी के पत्ते चौलाई के आकार के होते हैं। मेथी, पालक, शेपू, अम्मट चूका, अम्बाड़ी, राजगिरा (हरा-लाल दो तरह का), करडई, चौली, चौलाई, आला पाला ; कद्दू के पत्ते सहजने के पत्ते फूल, अरबी के पत्ते, पातक भाजी, इमली, मूँगफली पड़ी कढ़ी, पीले फूल वाली ताकका, भारंगी, काँदा पात ; प्याज के पत्ते, लाल-हरा माठ, अगस्त, पोकला, मोहरी; सरसों, चने; हरभराची, मूळा चे पान ; मूली के पत्ते, चाकवत, चंदन बटवा ; बथुआ, कोथंबीर ; धनियाँ, केनीकुडू ; कनकउ, कोबी चे पान आदि की भाजियों को स्वादिष्ट बनाने के लिए महाराष्ट्र में नमक, मिर्च, हल्दी, धनियाँ, हींग, जीरा, राई के साथ प्याज, लहसुन, हरी मिर्च, मूँगफली, चने की दाल, बेसन और गुड़ का उपयोग जरूरी है। खटास के लिए अमचूर की जगह इमली और अमसूल, सूखा हुआ कोकम रहता है। कोकम से बना अमसूल, पित्त को शान्त करने वाला माना जाता है। कनकउआ के पकौड़े बहुत स्वादिष्ट और खस्ता बनते हैं। पकौड़े में इसका पत्ता फूल कर दो भागों में बँटता हुआ पकौड़े को लम्बे पान सा सुन्दर आकार दे देता है। बरसात की झड़ी के साथ चाय-पकौड़े का मजा ही कुछ और है।

पीआईएमएस में निशुल्क डायलिसिस सेवा शुरू

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस),हॉस्पिटल उमरड़ा में डायलिसिस की निशुल्क सेवा शुरू की गई है। यह जानकारी देते हुए पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि उदयपुर संभाग में ही किडनी अथवा गुर्दा के लगभग 50 रोगी ऐसे हैं जिन्हें डायलिसिस की जरूरत रहती है। इनमें से अधिकतर रोगी अभावग्रस्त होते हैं जिन्हें येनकेन प्रकारेण बड़ी मुश्किल से डायलिसिस कराना पड़ता है। इसी सोच को मद्देनजर रखते हुए पीआईएमएस में इस सेवा को प्राथमिकता देते हुए डायलिसिस की नियमित निशुल्क व्यवस्था की गई है।

आशीष अग्रवाल ने बताया कि जिन रोगियों को गुर्दा रोग हो अथवा जिनके गुर्दे खराब हो गये हों उन्हें निश्चित समय में इस बीमारी से राहत पाने के लिए डायलिसिस की आवश्यकता पड़ती है। ब्लड में यूरिया और क्रिटिनिन के बढ़ जाने से किडनी के मरीजों को डायलिसिस की आवश्यकता रहती है। शहरी रोगियों के अलावा गांवों में भी ऐसे रोगी हैं जिन्हें यदि डायलिसि की निशुल्क सुविधा उपलब्ध तो वे आसानी से उपचार पा सकते हैं। पीआईएमएस हॉस्पिटल इस ओर अधिक सक्रिय रहकर ग्रामीण अंचलों में अपनी सेवाओं का विस्तार करेगा।

अक्ल से बड़ी भैंस

रंग-व्यंग्य-

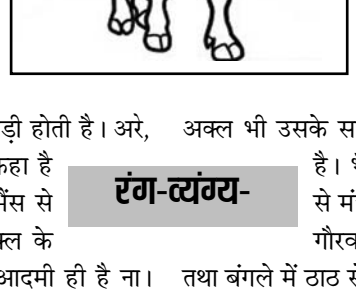

मैंने राह चलते आम आदमी से पूछा- भैया, अक्ल बड़ी है या भैंस। उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और बोला- मुझे क्या पता, मैं तो आम आदमी हूं पर हां मैंने खास आदमी से सुना है कि अक्ल भैंस से बड़ी होती है। अरे, जब खास आदमी ने कहा है तो निश्चित ही अक्ल भैंस से बड़ी होगी क्योंकि अक्ल के ठेकेदार तो यह खास आदमी ही है ना। हम तो काला अक्षर भैंस बराबर हैं, पर तुम अक्ल के पीछे लट्ठ लेकर क्यों पड़े हुए हो?

मैंने कहा- भैया, अब तक तो मैं भी यही समझता था कि अक्ल भैंस से बड़ी होती है, लेकिन जब से मैंने भैंस को गुलछर्रे उड़ाते देखा है, तब से मेरा दृष्टिकोण बदल गया है। मुझे लगने लगा है कि भैंस हर मायने में अक्ल से बड़ी होती है। जहां चाहे वहां मुंह मार सकती है। इच्छानुसार दूध दे सकती है। और तो और सार्वजनिक स्थान पर गोबर प्रक्षालन करके सरकार के सफाई अनुष्ठान को अंगूठा दिखा सकती है।

मजे की बात देखिये, भैंस जहां-जहां चरने जाती है अक्ल भी उसके साथ चरने चली जाती है। भैंस ने अपनी अक्ल से मंत्री की भैंस बनने का गौरव प्राप्त कर लिया है तथा बंगले में ठाठ से रहते हुए वीआईपी ट्रीटमेंट ले रही है। उसकी तूती बोल रही है। भैंस रूठ जाए तो उसको मनाने के लिए सारा प्रशासन लग जाता है।

अब तो सरकार भैंस के आगे बीन बजा रही है और भैंस जुगाली करते हुए मजे से झूम रही है। अरे, अब तो जमाना लद गया तब जिसकी लाठी होती थी, उसी की भैंस हो जाती थी। अब जिसकी भैंस होती है, लाठी भी उसी की हो जाती है। इसलिए अब भैंस अक्ल से बड़ी है।

-डॉ. देवेन्द्र 'इन्देश'-

एमबीए फार्मास्युटिकल मैनेजमेंट पाठ्यक्रम के लिए आवेदन की प्रक्रिया शुरू

उदयपुर। दुनियाभर में मान्यता प्राप्त और देश के अग्रणी स्वास्थ्य प्रबंधन शोध संस्थान आईआईएचएमआर विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ फार्मास्युटिकल मैनेजमेंट ने दो साल के पूर्णकालिक एमबीए फार्मास्युटिकल मैनेजमेंट पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए हैं। इस पाठ्यक्रम में कुल 60 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाएगा। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य दवा उद्योग के साथ काम करने के लिए योजना और परिचालन प्रबंधन तकनीक में अपेक्षित कौशल के साथ प्रशिक्षित पेशेवर लोगों को तैयार करना है, ताकि वे निदान के साथ प्रबंधन की समस्याओं का हल खोज सकें और आवश्यक परामर्श कौशल भी हासिल कर सकें।

एमबीए फार्मास्युटिकल मैनेजमेंट पाठ्यक्रम आईआईएचएमआर विश्वविद्यालय का एक प्रमुख पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आवश्यक परामर्श कौशल के साथ दवा उद्योग में काम करने के लिए अपेक्षित कौशल के माध्यम से प्रशिक्षित पेशेवर लोगों को तैयार करना है, ताकि वे योजना और परिचालन प्रबंधन तकनीक में भी कुशलता हासिल कर सकें। इसके अलावा दवा उद्योग में लागू निदान से जुड़े विश्लेषण का कौशल विकसित करने में भी यह पाठ्यक्रम सहायक है। इस पाठ्यक्रम को करने के बाद विद्यार्थी दवा प्रबंधन की तकनीक को समझते हैं। पिछले 10 वर्षों के दौरान अनेक कंपनियों ने आईआईएचएमआर कैंपस का दौरा किया है, जिनमें थम्बे ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स, अजमन, जेडएस एसोसिएट्स गुड़वांव, एक्सेन्चर, आईएमएस हैल्थकेयर, बैंगलूरू, नोवर्टिस हैदराबाद, एमएसडी, ॲबॉट इत्यादि प्रमुख हैं। पाठ्यक्रम पूरा करने वाले छात्रों को वर्ष 2014 में वार्षिक 6 से 11.58 लाख वेतन पैकेज की पेशकश की गई।

न्यूनतम 3 वर्ष की अवधि वाली मान्यता प्राप्त स्नातक उपाधि (फार्मेसी/ विज्ञान/ बायोटैक्नोलॉजी/ मैनेजमेंट/ मेडिसिन) प्राप्त विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के लिए आवेदन कर सकते हैं। स्नातक उपाधि में न्यूनतम सकल 50 प्रतिशत अंक आवश्यक हैं। साथ ही सीएटी/एमएटी/सीएमएटी/एटीएमए/एक्सएटी/ जीपीएटी या आईआईएचएमआर फार्मा एमएटी स्कोर होना भी आवश्यक है। दो साल के संबद्ध अनुभव वाले प्रत्याशियों को सीएटी/एमएटी/सीएमएटी/एटीएमए/एक्सएटी/ जीपीएटी या आईआईएचएमआर फार्मा एमएटी स्कोर से छूट प्रदान की जाएगी। स्नातक उपाधि के परिणाम की प्रतीक्षा करने वाले/ 2016 में स्नातक उपाधि के आखिरी वर्ष की परीक्षा देने वाले प्रत्याशी भी आवेदन कर सकते हैं। ऐसे प्रत्याशियों को पाठ्यक्रम शुरू होने के दो महीने के भीतर स्नातक परीक्षा का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा।

उम्मीदवार प्रवेश के लिए www.iihmr.edu.in. से आवेदन पत्र डाउनलोड कर सकते हैं। जरूरी दस्तावेजों के साथ पूर्णत: भरा गया आवेदन पत्र यूनिवर्सिटी के पते पर या ऑनलाइन प्रस्तुत किया जा सकता है। आवेदन पत्र के लिए अनुरोध की अंतिम तिथि 30 जून, आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 4 जुलाई रखी गई है। ग्रुप डिस्कशन और साक्षात्कार 14-15 अप्रेल, 9-10 जून, और 7-8 जुलाई 2016 को होंगे। चयन पूरी तरह मेरिट के आधार पर होगा, जिसका निर्धारण स्नातक उपाधि में प्राप्त अंकों, उल्लिखित मैनेजमेंट एप्टीट्यूड परीक्षा के स्कोर / अनुभव, ग्रुप डिस्कशन और व्यैक्तिक साक्षात्कार के आधार पर किया जाएगा।

कलक्टर क्लास में बालिका को पेन गिफ्ट

उदयपुर। कलक्टर रोहित गुप्ता ने लियों का गुड़ा उच्च प्राथमिक विद्यालय का आकस्मिक निरीक्षण कर वहां के बच्चों के अध्ययन, अध्यापन तथा स्वच्छता संबंधी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने बच्चों की क्लास में गणित के सवाल पूछे और सबसे पहले सही हल करने वाली 8वीं की बालिका सीता कुंवर को अपना पेन गिफ्ट किया। उन्होंने भगतसिंह की क्रांतिकारी भूमिका तथा स्वामी विवेकानंद के बारे में भी बच्चों से सवाल पूछे।

कैंसर के प्रति जागरूकता पर जरूरी व्याख्यान

उदयपुर। वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति उमंग की ओर से योग सेवा समिति के कार्यालय में मुख्य वक्ता के रूप में कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. कुरेश बम्बोरा ने कहा कि पहली और दूसरी स्टेज में ही पकड़ में आ जाने पर कैंसर सिर्फ सर्जरी से ही समाप्त किया जा सकता है। तीसरी और चौथी स्टेज में जाने पर कीमो और रेडियेशन की आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने बताया कि पुरुषों में मुख्य रूप से मुंह, प्रोस्टेट और फेफड़ों के कैंसर पाए जाते हैं। यदि मुंह में कोई छाला हो गया है और वह 15 दिन से अधिक रह गया है, गंदी बदबू आती है, दांत गिरने लगते हैं, सफेद झिगी दिखती है, थूक में खून आता है, वजन घट या बढ़ रहा है तथा मुंह का खुलना कम हो गया है तो तुरंत प्रभाव से कैंसर विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए। महिलाओं में ब्रेस्ट, सर्वाइकल और बच्चेदानी के मुंह का कैंसर पाया जाता है। सभी का इलाज संभव है। हर तरह की गांठ कैंसर की नहीं हो सकती लेकिन जांच कराने में पीछे नहीं रहना चाहिए। इससे पूर्व समिति के अध्यक्ष सुंदरलाल दक ने सभी सदस्यों को योग, प्राणायाम, भ्रामरी करवाते हुए प्रतिदिन पन्द्रह मिनट इनका अभ्यास जरूरी बताया।

स्मार्ट सिटी की चहल पहल

पीआईएमएस में आईसीयू की 24 घंटे सेवाएं शुरू

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में आईसीयू की 24 घंटे सेवाएं शुरू हो गई हैं। पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि पीआईएमएस उमरड़ा में आईसीयू की 24 घंटे सेवाएं शुरू की गई हैं। इससे गंभीर बीमारी वाले मरीजों के उपचार में और ज्यादा सुविधा होगी। अनुभवी डॉक्टर हर समय मरीज की देखभाल करेंगे। ग्रामीण क्षेत्रों के मरीजों को विशेष लाभ मिलेगा और उनकी सेवाओं को प्राथमिकता दी जायेगी। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में पीआईएमएस में अधिकांश रोगी गांव से आते हैं। उन्हें हर तरह की सुविधा हर समय यहां उपलब्ध कराई जाती है। ग्रामीणों की पेसिफक के प्रति इसी भावना को मद्देनजर रखते हुए ही आईसीयू संबंधी सेवाओं का विस्तार किया गया है।

सुविवि में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खुलेगा

उदयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने युवाओं से सामाजिक सरोकारों में सशक्त एवं समर्पित भागीदारी निभाने का आह्वान किया। वे विवेकानंद सभागार में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के केन्द्रीय छात्रासंघ के वार्षिकोत्सव 'सरगम-2016' में मुख्य अतिथि पद से संबोधित कर रहे थे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने की। राठौड़ ने श्रेष्ठ एनसीसी कैडेट्स को पुरस्कार प्रदान किए। सरगम में प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की सराहना की। प्रदेश में अ श्रेणी विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठित पहचान बनाने के लिए बधाई दी और सुखाड़िया विश्वविद्यालय परिसर में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोले जाने की घोषणा की। कुलपति प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गरिमामयी सर्वोत्कृष्ट पहचान एवं विकास यात्राा पर प्रकाश डाला। आरंभ में छात्रसंघ अध्यक्ष सोनू अहारी तथा अधिष्ठाता डॉ. आनंद पालीवाल ने स्वागत कर स्मृति चिन्ह भेंट किए। समारोह में खेरवाड़ा विधायक नानालाल अहारी, सलूम्बर विधायक अमृतलाल मीणा, मावली विधायक दलीचन्द डांगी, उप जिलाप्रमुख सुन्दरलाल भाणावत, ताराचंद जैन, पार्षद नानालाल बया, वीरेन्द्र खींची, नीरज अग्निहोत्री, ललित तलेसरा, डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री सहित छात्र संघ के पूर्व पदाधिकारी, समाजसेवी और विश्वविद्यालयी छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

हिमांशी राव को गार्गी पुरस्कार

कानोड़। शासन सचिव माध्यमिक शिक्षा राजस्थान सरकार एवं सचिव बालिका शिक्षा फाउंडेशन जयपुर द्वारा कुमारी हिमांशी राव, कानोड़ को सीनियर सैकण्डरी परीक्षा 2015 विज्ञान संकाय में 76.20 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर गार्गी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सूचना केंद्र भविष्य संवारने का तीर्थ

एलआईसी द्वारा सूचना केन्द्र को वाटर कूलर भेंट

उदयपुर। भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय की ओर से सूचना केन्द्र उदयपुर को वाटर कूलर भेंट किया गया। इसका लोकार्पण वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक बी.एस. शर्मा ने किया। इस अवसर पर निगम के विपणन प्रबन्धक एम.के. गर्ग सहित भारतीय जीवन बीमा निगम के प्रबन्धक एवं अधिकारी, सूचना केन्द्र के पाठक तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। पाठकों ने वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक शर्मा का शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया।

मुख्य अतिथि भारतीय जीवन बीमा निगम के वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक बी.एस. शर्मा ने सूचना केन्द्र को भविष्य संवारने का तीर्थ बताया और कहा कि उदयपुर का सूचना केन्द्र हमेशा से आदर्श रहा है। यहां अध्ययन कर अनगिनत युवाओं ने अपने जीवन में ऊँचाइयां पायी हैं। केन्द्र के लिए सुविधा विस्तार में एलआईसी द्वारा हरसंभव सहयोग दिया जाएगा। समारोह में शर्मा ने सूचना केन्द्र के लिए शुद्ध पेयजल व्यवस्था की दृष्टि से भारतीय जीवन बीमा निगम, उदयपुर मण्डल की ओर से आर.ओ. लगाए जाने की घोषणा की। आरंभ में सूचना केन्द्र के उप निदेशक डॉ. दीपक आचार्य ने वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक शर्मा एवं विपणन प्रबन्धक गर्ग का बुके, उपरना एवं पगड़ी पहना कर स्वागत किया। सहायक जनसंपर्क अधिकारी पवनकुमार शर्मा ने सूचना केन्द्र के लिए वाटर कूलर भेंट करने पर आभार जताया। संचालन नेहरू युवा केन्द्र के जिला युवा समन्वयक पवनकुमार अमरावत ने किया। इससे पूर्व वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक ने श्रीनाथजी की तस्वीर की पूजा-अर्चना कर समारोह की शुरूआत की।

गृहमंत्री द्वारा ऑडिटोरियम तथा सोलर प्लांट लोकार्पित

उदयपुर। गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने पर्यटन को जनजीवन का मूलाधार बताते हुए इसे अधिकाधिक बढ़ावा दिए जाने के लिए सभी संभव प्रयासों को मूर्त रूप दिए जाने की आवश्यकता बताई। गृहमंत्री नगर निगम के ऑडिटोरियम के उद्घाटन पर बोल रहे थे। इसका नामकरण पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम किया। इस मौके पर गृहमंत्री ने नगर निगम छत पर स्थापित सोलर प्लांट को भी लोकार्पित किया। गृह मंत्री ने डोर टू डोर कचरा संग्रहण, गोर्धनसागर रिंग रोड, पन्नाधाय पार्क, टूरिस्ट सर्किट की बसों की संख्या एक की बजाय चार रखने, सामुदायिक भवनों में रात्रि विश्राम को सुविधाजनक बनाने, हिरणमगरी में ऑडिटोरियम कार्य पूरा करने, यातायात सुगम बनाने पिछोला के चांदपोल क्षेत्र के लिए एक पुलिया बनाने की, माणिक्यलाल वर्मा पार्क को फ्लोवर पार्क के रूप में विकसित करने तथा पहाड़ी के निचल हिस्सों में खाली पड़ी भूमि पर मिनी सेंचुरी बनाने को जरूरी बताते हुए इस दिशा में पहल करने पर जोर दिया। महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने निगम की गतिविधियों की जानकारी दी। समारोह में उपमहापौर लोकेश द्विवेदी, आयुक्त सिद्धार्थ सिहाग, पूर्व सभापति युधिष्ठिर कुमावत, पूर्व महापौर रजनी डांगी, दिनेश भट्ट, गुणवन्तसिंह झाला, बिहारीलाल, प्रेमसिंह शक्तावत, पारस सिंघवी, किशन रैगर सहित पार्षदगण, समाजसेवी, निगम अधिकारी, कार्मिक, गणमान्य नागरिक आदि उपस्थित थे।

छोटी-छोटी आंखों से संसार को जोड़ते बच्चे

(डॉ. भानावत के व्याख्यान से प्रभावित होकर महाराष्ट्र से एक शिक्षक द्वारा प्रेषित टीप)

-राजेश पवार-

महाराष्ट्र के नंदुरवार के जे. पी. स्कूल कुवा, अक्कल कुवा में शिक्षक की हैसियत से मैंने मार्च 2015 में उदयपुर के सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र में भारत सरकार की ओर से प्रशिक्षणार्थी के रूप में भाग लिया। इस दौरान 11 मार्च को आदिवासी संस्कृति पर डॉ. महेन्द्र भानावतजी द्वारा दिये गये दो व्याख्यान सुने। उनसे प्रभावित हो मैं उनसे मिलने उनके निवास पर गया। उनसे हुई लंबी बातचीत से मेरे मानस पर जो असर पड़ा वह था- बच्चों का साथ कभी मत छोड़ना। उनकी प्रतिभा को पहचानते हुए उन्हें उचित मंच देना। मैने उनके इस कथन को एक मंत्र के रूप में गांठ बांध लिया।

पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास पर मैंने ध्यान केंद्रित किया। धीरे-धीरे मैं स्कूल के सभी बच्चों के साथ अपने को पा रहा हूं। ब्लॉक लेवल की प्रतियोगिता में हिस्सा लेने स्कूल के बच्चे देवमोगरा (पू.) नामक गांव में आए हुए थे। हमारे कुल चौदह बच्चे साथ थे। तीन दिन प्रतियोगिता थी। बच्चों को जब भी ऐसा अवसर मिलता तो सभी आनंदविभोर हो उठते हैं।

वे अपनी छोटी-छोटी आंखों से पूरी दुनियां देखते हैं। संसार को अपने जीवन से जोड़ने की कोशिश करते हैं। छात्र रामसिंह ने भी कुछ ऐसा ही किया। उसके माता-पिता मजदूरी हेतु गुजरात गये हुए हैं। इन दिनों वह अपनी बड़ी बहन के साथ रहता है। खेलते हुए रामसिंह ने देखा कि मैदान के बाहर एक मां बहुत ही गुस्सा होकर अपने दो

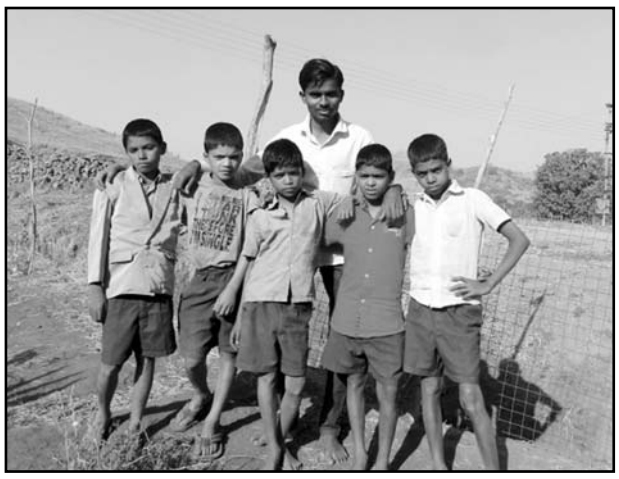

छोटे-छोटे बच्चों को घर ले जा रही है। यह देख उसे अपनी मां याद आ गई। वह मन ही मन रचने लगा-

दो बच्चों की मां,
कैसे गुस्सा करती है उनपे
चाचा के घर गया तो,
चाची गुस्सा है मुझपे
मामा के घर गया तो,
मामी गुस्सा है मुझपे
मां खेत में गयी तो,
मुझे मिले पैसे
मैंने खाए वेपर,
खुश हुआ आया घर पर
मां वापसी आयी तो,
मुझे मिली मार।

अपनी भावनाओं को कविता में लिखने की रामसिंह की यह पहली कोशिश थी। उसने इस कविता को बहुत ही बेहतरीन ढंग से धुन में सुनाई। इसी वक्त मुझे मेरे स्कूल में पढ़ने वाला एक दिग्दर्शक -किरण याद आ गया।

किरण ने सात-आठ बच्चों को साथ लेकर एक ड्रामा बनाया जिसका सार था- पहाड़ में रहने वाला बच्चा कलेक्टर बन गया। इसे 26 जनवरी को गांव के सामने पेश किया। गांववालों ने बच्चों की ऐसी कला प्रस्तुति पहलीबार देखी। उस नौटंकी में आदिवासी जनजीवन की बहुत सी छवियां देखने को मिलीं। इन बच्चों के साथ-साथ अब और भी बच्चे कथा लिखने और कविताएं करने लगे हैं। उनके विषय रहते हैं-जंगल, जानवर, पहाड़, घाट, पत्थर, पेड़ आदि। इन्हीं बच्चों में एक है आनंद जो अपने जीवन के एक बड़े दुख को छिपाकर स्वयं हंसता रहता है और सबको हंसाता रहता है। उसका कथा सुनाने का तरीका कुछ ऐसा है कि सुननेवाले पेट पकड़कर हंसते रहते हैं।

अभिव्यक्ति की क्षमता का बच्चों का सफर बहुत ही खुशहाल रहा है। खासकर पिछले आठ-नौ महिनों से इन बच्चों के साथ सनपुड़ा के पहाड़ी आदिवासी क्षेत्र में रहकर मैं भी बहुत कुछ सीख रहा हूं। यह मेरे लिए गौरव की बात है।

चार-पांच सालों से मैं इस क्षेत्र में काम कर रहा हूं। इस छोटे से अनुभव में मुझे बहुत से ऐसे दीप स्तंभ मिले हैं जिनका जीवन कार्य और साथ मेरे लिए मार्गदर्शक और प्रेरक बना हुआ है। उन्हीं में एक वटवृक्ष समान डॉ. महेन्द्र भानावतजी हैं।

सेलिब्रेशन मॉल में मैक्स स्प्रिंग कलेक्शन के जलवे

उदयपुर। रंग-बिरंगी रोशनी में नहाए मंच पर शास्त्रीय व पाश्चात्य धुनों के कभी तेज तो कभी मद्धम संगीत के बीच आकर्षक मैक्स स्प्रिंग 2016 समर कलेक्शन में सजे मॉडल की रैम्पवॉक ने शाम को खुशनुमा और रंगीन बना दिया। परिधानों के ताजा-तरीन और अद्भुत कलेक्शन को लेकर आए नामी मॉडल के हर अंदाज का बड़ी संख्या में मौजूद कद्रदानों ने कभी हाथ उठा कर तो कभी तालियों की गड़गड़ाहट से साथ स्वागत किया। यह शाम सजी भारत के शीर्ष फैशन ब्राण्ड मैक्स के स्प्रिंग समर 2016 कलेक्शन के उदयपुर के सेलिब्रेशन मॉल में लांचिग पर। मुख्य अतिथि लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ व मैक्स के रीजनल हैड नार्थ सौरभ गर्ग ने लोगो अनावरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। डांस ड्यूएट की रिमिक्स धुनों पर रोमांटिक प्रस्तुति के बाद स्प्रिंग कलेक्शन लांच किया गया। वासंती फिजा और चकाचौंध रोशनी के बीच रैम्प पर मॉडल ने 'लीव फॉर टुडे' की थीम पर क्लासिक नेचुरल, बोहो-सफारी, सीजनल पेस्टल पॉप्स और अलग-अलग मूड वाले कलेक्शन को पहन कर दिलकश अंदाज में वॉक किया। लोगों ने परिधानों को बारीकी से देखा।

इस अवसर पर मैक्स फैशन के रीजनल हैड नॉर्थ सौरभ गर्ग ने कहा कि 'लीव फॉर टुडे' प्रतिदिन की फैशन के इर्द-गिर्द घूमता है। लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि मुझे मैक्स का स्प्रिंग समर कलेक्शनन लांच करते हुए और आप सभी से इस स्टोर पर मुलाकात करते हुए अपार खुशी हो रही है। मैं ऐसी नई रेंज का पक्षधर हूं जिसे पहनने के बाद व्यक्तिगतता का एहसास हो। धागों से बुने इस कलेक्शन में मॉर्डन स्टाइल की एक झलक है।

नन्ही लड़कियों के लिए तैयार स्प्रिंग कलेक्शन में फ्रिल, फ्लोरल और तितलियों के समावेश से ऐसा लगा मानो स्टेज पर प्रकृति खुद उतर आई हो। इसमें होल रेंज ऑफ स्टिपी ड्रेसेज, जम्प सूट्स, क्यूट लिटिल स्कर्ट् जो डीप इण्डिगो से शूटिंग पेस्टल तक की रेंज ने भी खूब लुभाया। मैक्स मैन्स वियर के डीप नेचुरल इंस्पायड कलेक्शन के इण्डिगो और मोनोक्रोम स्टोरीज के साथ यूनिक कलेक्शन नेचुरल स्प्रिट विद ड्रॉप क्रॉच जॉगर्स, पैटर्नड पोलो और मोटिफ प्रिंटेड शॉर्ट्स विद डिजिटल टी, एप्लीक टीज, फैशन पैनल टीज और ऑम्ब्रे टाइप ऑफ टीज भी शाम की खास पेशकश रहे। इसके बाद एथनिक वियर में इतिहास और विरासत की झलक देखने को मिली। इण्डिगो, फोकलोर इस्पायर्ड रेंज। बोहो ड्रेसेज में लांग कुर्ता, प्लाजो, कुल्लॉट्स को भी दर्शकों की दाद मिली।

कुम्भा संगीत समारोह में डॉ. प्रभा अत्रे सम्मानित

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विवेकाननद सभागार में महाराणा कुम्भा संगीत परिषद द्वारा 19 से 21 फरवरी तक तीन दिवसीय महाराणा कुंम्भा संगीत समारोह आयोजित किया गया। समारोह में पद्मभूषण डॉ. प्रभा अत्रे को निरंजननाथ आचार्य सम्मान प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. आई. वी. त्रिवेदी एवं विशिष्ठ अतिथि रोटरी के पूर्व प्रान्तपाल निर्मल सिंघवी तथा आरएसएमएमएल के प्रशासनिक अधिकारी दिनेश कोठारी थे। अध्यक्षता

हिन्दुस्तान जिंक के उपाध्यक्ष सीएसआर मेहता ने की। समारोह में पखावज, तबला, मृदगंम, खंजीरा के बीच हुए सवाल जवाब का श्रोताओं ने जमकर का आनन्द लिया। प्रख्यात तबला वादक पं. तन्मोय बोस ने प्रारम्भ में तबला सोलो के साथ चार ताल की एक सवारी 11 मात्रा की निबद प्रस्तुति दी तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये।

इस अवसर पर पं. बोस ने कहा कि इस धरती पर जब तक मानव प्रजाति का वास रहेगा तब तक देश में शास्त्रीय संगीत जीवित रहेगा। समारोह के द्वितीय चरण में पद्मभूषण डॉ. प्रभा अत्रे ने कार्यक्रम की शुरूआत राग श्याम कल्याण से की। राग भैरवी लाल दीपचन्यी में आएं नहीं मोरे श्याम की प्रस्तुति दी तो श्रोता मंत्रमुग्ध होगये। मंच पर उनका साथ चेतना भानावत, विनोद लेले एवं प्रोमीता मुखर्जी ने दिया।

परिषद की ओर से मुबंई की प्रख्यात शात्रीय गायिका पद्मभूषण डॉ. प्रभा अत्रे को अतिथियों सहित विश्वबन्धु आचार्य, दीनबन्धु आचार्य ने पं. निरंजनाथ आचार्य स्मृति पुरूस्कार के तहत स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लोकेश जैन एवं उर्वशी सिंघवी ने किया।

दूसरे दिन कश्यप बन्धुओं के लय एवं ताल ने समां बांधा

जबलपुर के शास्त्रीय गायक प्रभाकर एवं दिवाकर कश्यप बन्धुओं ने लय एवं ताल के बीच शास्त्रीय संगीत की विभिन्न ताल ,विलंबित रचना के बीच लय एवं ताल के संगम की जो प्रस्तुति दी उससे समारोह में समां बंध गया। कश्यप बन्धुओं की बनारसी ठुमरी की रचना 'राखियों बालम वाही नजरिया..' ने माहौल में समां बांध दिया। तानपुरे पर लाखन व माखन, तबला पर रामेन्द्रसिंह सोलंकी तथा हारमोनियम पर डॉ. विवेक बनसोड़ ने कश्यप बन्धुओं के साथ संगत की।

इस अवसर पर डॉ. यशवन्त कोठारी, के. एन. नाग, रमेश चौधरी, मुकेश माथुर दिनेश माथुर ने मुरली नारायण माथुर पुरस्कार शास्त्रीय गायन के सुप्रसिद्ध कलाकार पंड़ित नयन घोष को प्रदान किया।

कत्थक नृत्य की प्रस्तुति ने सभी को किया मोहित

समारोह के अंतिम दिन मुम्बई के पंड़ित रूपक कुलकर्णी ने बांसुरी से उदयपुर की हरी-भरी वादियों एवं मेवाड़ की पहचान बने हुए वीर रस देश की सबसे प्राचीनतम राग यमन से उपस्थित श्रोताओं को चकित कर दिया। नवरस वाली राग यमन में विशेष रूप से पं. कुलकर्णी ने वीर रस का वादन का चयन किया। इनके साथ तबले पर पं. सुधीर पाण्डे व बांसुरी पर कुसुमाकर पण्ड्या ने संगत की।

परिषद के मानद सचिव डॉ.यशवन्त कोठारी ने शहर में इतने बड़े राष्ट्रीय स्तर के आयोजनों के लिए एक बड़े ऑडिटोरियम की आवश्यकता पर जोर दिया। संचालन डॉ. लोकेश जैन एवं उर्वशी सिंघवी ने किया।

स्पिरिट ऑफ इण्डिया में आस्ट्रेलिया सांसद का स्वागत

उदयपुर। स्पिरिट ऑफ इण्डिया रन के अन्तर्गत श्रीनगर तक की रेस पूरी करने निकले आस्ट्रेलिया के सांसद एवं पूर्व मंत्री पेट फार्मर का उदयपुर पहुंचने पर शानदार स्वागत किया गया।

पेट फार्मर ने भारत को भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं और प्रेम धाराओं के कारण अतुलनीय एवं विलक्षण बताया और कहा कि वे इस धरा पर आकर बेहद अभिभूत हैं। उनके शरीर का एक भाग आस्ट्रेलिया है। दूसरा भारत और बीच में हृदय। भारत भूमि में पग-पग पर सांस्कृतिक, भौगोलिक, धार्मिक विविधताएं हैं। नैसर्गिक सौन्दर्य है। इतना सब कुछ है जो अभिभूत कर देने वाला है। ऐसा दुनिया में और कहीं नहीं है। भारत में पर्यटन की अपार संभावनाओं को भी उनकी यात्रा से बल मिलेगा तथा उनके साथ चल रही टीम द्वारा बनाई जा रही डॉक्यूमेन्ट्री से पूरी दुनिया को भारत के बारे में अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने तथा इस अतुलनीय देश को जानने का मौका मिलेगा। पेट फार्मर के साथ उनकी पत्नी तानिया, ट्रेनर व सपोर्टर जोस व केटी भी थे।

(पृष्ठ दो का शेष)

।। श्री हरि :।।

सादर अभिवादन

रात्रि में टीवी में देखा कि ''प्रसिद्ध साहित्यकार महेन्द्रजी भानावत का निधन हो गया''- अत्यंत मार्मिक वेदना हुई जैसे सहोदर और साहित्य-मार्गदर्शक ही चला गया हो।

सदा से ही अर्थात् पांच दशकों से भी अधिक से वे भातृवत थे। वे भाषा परिषद में पुरस्कार लेने कलकत्ता पधारे थे 35 वर्ष पूर्व ; तब 2-3 दिवस मैं साथ ही था। फिर उनके बहाने से ही अनुज (नहीं अग्रज) नरेन्द्रजी ने कलकत्ते के जैन सम्मेलन में मुझे भी, अनेक जैन पंडितों के संग, अतिथिशाला (सरदारमलजी कांकरिया की विशाल कोठी, 2 क्वींस पार्क, कोलकाता- 19) में तीन-दिन (रात-दिवस) वहीं अपने साथ रखा। खाना-पीना, भोजन-चाय सभी उनके साथ ही होता था। मैं उदयपुर दो बार आया, 2-3 मार्च 1959 को भूपाल कॉलेज में बी.ए. परीक्षा में भूगोल विषय में प्रेक्टीकल परीक्षा देने। पुन: झुंझुनू से एक मास पश्चात आया बी.ए. के सभी प्रश्नपत्रों की परीक्षा देने और संपूर्ण अप्रैल माह ठहरा। होली भी वहीं की हुई। इंटर एवं मैट्रिक परीक्षा के बीच में होली क्रमश: नवलगढ़ और सीकर में हुई थी। नरेन्द्रजी के स्मृति ग्रंथ में मेरी कविता भी छापी थी उन्होंने। मन था कि जयपुर में नरेन्द्रजी के घर जाता किंतु हो नहीं पाया यद्यपि मैं जयपुर 2000 से 2004 तक की पांचों फरवरी में 15-20 दिन रहा 15 पटेल नगर झोंटवाड़ा में ठहरा था। पास में ही कल्याणसिंह राजावत का चिड़ावा हाउस है, 53 शिल्प कोलोनी में जहां नित्य संध्या गोष्ठी जुड़ती थी।

सावधानीपूर्वक उनका चित्र और जीवनी भेजदें। बेसी सामग्री जोड़ पाएंगे तो नैणसी का संपूर्ण ''महेन्द्रजी भानावत स्मृति विशेषांक'' ही छाप लूंगा। पत्राचार द्वारा संपर्क, निरंतर बनाए रखें।

शुभेच्छु
अम्बू शर्मा

आत्मीयता, पारिवारिकता और भाईचारा का इससे बड़ा जमीनी घनिष्ट रिश्ता और क्या हो सकता है! कितने लोग निभा पाते हैं अपने रिश्तों को! पत्रों का संसार कितना बड़ा, कितना घनिष्ट और कितना घनीभूत होता है! अम्बूजी ने मैत्री-रिश्तों का निर्वाह कभी दिखावटी नहीं किया।

हमारे यहां तो कहावत भी है कि पटेलजी का पाड़ा मरने पर तो पूरा गांव संवेदना व्यक्त करने पहुंचता है पटेलजी को दिखाने कि पूरा गांव उनके साथ है लेकिन पटेलजी के मरने पर कोई परिंदा ही वहां पांव नहीं धरता।

सच ही है, अन्तस के, हिरदै के रिश्ते दिखावटी नहीं होते। वे कैसे होते हैं, कोई कथन नहीं बोलता, अपनेआप व्यक्त होते हैं जब समय आता है। अम्बूजी जैसे रिश्ते हम सबके हों। भगवान उनको शताधिक वर्ष की लम्बी उम्र दे- स्वस्थ रहने की, नैणसी को नयनाभिराम बनाये रखने की, परिजनों के साथ परचम फहराने की और मित्रों के साथ मोहब्बत बांटने की।

सुनहरे भविष्य की डगर सुकून दे रही है जनजाति प्रतिभाओं को

प्रदेश में जनजातियों के उत्थान एवं जनजाति क्षेत्रों के समग्र विकास की दिशा में राज्य सरकार के प्रयासों की बदौलत अब जनजाति कल्याण का नया दौर परवान पर है। जनजाति विकास की योजनाओं और कार्यक्रमों के सार्थक क्रियान्वयन के साथ ही अब जनजाति वर्ग की प्रतिभाओं को सुनहरे भविष्य की राह प्रदान करने की दिशा में ढेरों कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनके माध्यम से विभिन्न सेवाओं में आशातीत सफलता प्राप्त कर बेहतर भविष्य पाने की राह प्रशस्त हुई है।

राज्य सरकार के प्रयासों का ही परिणाम है कि जनजाति प्रतिभाएं विभिन्न प्रकार की सेवाओं में अपनी उल्लेखनीय भागीदारी अदा करने लगे हैं। जनजाति वर्ग से संबंधित सभी प्रकार की प्रतिभाओं के उन्नयन, प्रोत्साहन एवं सम्बलन के लिए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे की सोच के अनुरूप हर क्षेत्र में व्यापक स्तर पर जनजाति विकास गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है।

जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री नंदलाल मीणा की पहल तथा जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के अनवरत प्रयासों का प्रभाव अब क्षेत्र में दिखाई देने लगा है। विभागीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों के सार्थक क्रियान्वयन में विभागीय अधिकारियों एवं कार्मिकों के साथ ही जनजाति क्षेत्रों के जन प्रतिनिधियों की सहभागिता भी उल्लेखनीय परिणाम दर्शा रही है।

एक ओर जहां जनजाति वर्ग की प्रतिभाओं को स्थापित किए जाने के लिए कोचिंग, छात्रवृत्ति और मार्गदर्शन की सुविधाएं मुहैया करवाई जा रही हैं वहां दूसरी ओर खेल, शिक्षा और राज्य सेवाओं के साथ ही सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न पतिभाओं और कर्मयोगियों को सम्मानित कर उनके प्रोत्साहन के लिए हर साल होने वाले आयोजनों ने भी जनजाति प्रतिभाओं में पेरणा का संचार किया है।

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के अधीन संचालित एवं टीआरआई के नाम से मशहूर माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा जनजाति प्रतिभाओं के लिए बहुत से प्रशिक्षण एवं कोचिंग कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। इसका लाभ जनजाति प्रतिभाओं को प्राप्त हो रहा है और वे उच्च प्रशासनिक एवं अन्य सेवाओं के लिए अपने आपको निखार रहे हैं।

अकेले कोचिंग क्षेत्र को ही देखा जाए तो टीआरआई द्वारा जनजाति क्षेत्र के विद्यार्थियों के सुनहरे भविष्य के लिए कोचिंग की विभिन्न योजनाओं का सूत्रपात किया जा रहा है। टीआरआई की वार्षिक कार्य योजनान्तर्गत कोचिंग कार्य कराये जाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। और इसके लिए बाकायदा पर्याप्त बजट का प्रावधान जन कल्याण निधि अन्तर्गत किया गया है जिसमें कोषालय से बजट आहरण का प्रावधान है।

जिला स्तर पर पूर्व प्रतियोगी परीक्षा कोचिंग कार्यों के लिए डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं प्रतापगढ़ के परियोजना अधिकारी (जनजाति) कार्यालयों को भी इस योजना के क्रियान्वयन हेतु सीधे ही विभाग द्वारा राशि हस्तान्तरित की जाती रही है।

तकनीकी पाठ्यक्रम (आई. आई. टी., आई. पी. एम. टी., पी.ई.टी.) में भर्ती हेतु कोचिंग के अन्तर्गत उदयपुर एवं कोटा के चयनित प्रतिष्ठित संस्थाओं से कोचिंग लेने वाले लाभार्थियों को अधिकतम 55 हजार रुपए फीस पुर्नभरण में, 5 हजार रुपए कोचिंग के समय, स्टेशनरी क्रय एवं छात्रवृत्ति के लिए प्रतिमाह एक हजार रुपए की दर से दस माह के लिए अधिकतम 10 हजार रुपए (लाभार्थियों की प्रतिमाह 80 प्रतिशत की दर से उपस्थिति होने पर दी जाती है।

राज्य सरकार की योजनानुसार अनुसूचित क्षेत्र के जनजाति छात्र-छात्राओं को तकनीकी शिक्षा के लिए कोचिंग योजनान्तर्गत कुल अधिकतम 70 हजार रुपए प्रति छात्र की दर से पुनर्भरण किये जाने का प्रावधान है। इस योजना में जिन संस्थाओं का चयन किया गया है उनमें कोटा का एलेन केरियर इस्टीटयूट, केरियर पॉइन्ट एवं रेजोनेन्स प्रा.लि. और उदयपुर के एसेन्ट केरियर पॉइन्ट एवं एमके जैन क्लासेस शामिल हैं। इन संस्थाओं की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर छात्रों के प्रवेश लेने के पश्चात टीआरआई द्वारा कोचिंग व्यय राशि का पुनर्भरण किया जा रहा है। तकनीकि शिक्षा कोचिंग योजना में पिछले तीन वर्ष में 141 जनजाति प्रतिभाओं को लाभान्वित किया जा चुका है।

-डॉ. दीपक आचार्य

कैलाशपुरी में महाशिवरात्रि पर्व पर विशेष अनुष्ठान

उदयपुर। फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, 7 मार्च को कैलाशपुरी स्थित मंदिर श्री एकलिंगजी में महाशिवरात्रि का महोत्सव रात्रि 10 बजे से मनाया जाएगा।

शिवरात्रि को त्रिकाल पूजा सामान्य दिनों की तरह ही होगी। श्रीएकलिंगजी ट्रस्ट के अनुसार महाशिवरात्रि की विशेष पूजा सोमवार रात्रि 10 बजे से आरंभ होगी जो चार प्रहर तक निरंतर चलती रहेगी और दूसरे दिन मंगलवार प्रात: 11.30 से 12.00 बजे के बीच पूर्ण होगी। चारों प्रहर की पूजा में विशेष श्रृंगार किया जाएगा। विशेष पंचामृत धारण होगा।

महाशिवरात्रि पर चारों प्रहर की पूजा में प्रत्येक प्रहर में 13 रूद्रीपाठ होंगे। प्रत्येक प्रहर में सवा नौ किलो, प्रत्येक दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर से पंचामृत श्री एकलिंगनाथ को धारण कराया जाएगा।

इस प्रकार कुल सवा 46 किलो की मात्रा में पंचामृत की सामग्री एक प्रहर में चढ़ाई जाएगी एवं 52 रूद्राभिषेक होंगे। महाशिवरात्रि पर पैलेस बैण्ड सेवा में चारों प्रहर बजेगा। महाशिवरात्रि पर चारों प्रहर की पूजा में दर्शन रात्रि 10 बजे से दूसरे दिन अपरान्ह तक निरंतर खुले रहेंगे।

दर्शन 7 मार्च, सोमवार अलसुबह 4.30 से 7.00 बजे तक, मध्यान्ह 10.30 से 1.30 बजे तक, सायंकाल 4.45 से 7.45 बजे तक, महाशिवरात्रि पूजन **(चार प्रहर) :**

रात्रि 10 से प्रथम प्रहर की सेवा प्रारंभ होगी जिसमें दर्शन श्री एकलिंगजी मंदिर के पाट निरंतर खुले रहेंगे।

फार्म : 4

(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर
दिनांक : 29.2.2016

डॉ. तुक्तक भानावत
प्रकाशक के हस्ताक्षर

स्मार्ट सिटी में अजूबे बर्ड पार्क का शिलान्यास

सिंगापुर के बर्ड पार्क की तर्ज पर 11 करोड़ में बनेगा देश का अपने किस्म का पहला पार्क

उदयपुर। यहा के गुलाबबाग में 11.5 करोड़ की लागत से बनाये जाने वाले बर्ड पार्क का शिलान्यास गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया तथा वन, पर्यावरण एवं खानमंत्री राजकुमार रिणवा ने किया।

समारोह में गृहमंत्री श्री कटारिया ने उदयपुर अंचल में वनीय पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाओं को मूर्त रूप देने के लिए योजनाबद्ध प्रयासों की आवश्यकता जताई और कहा कि वन क्षेत्रों में कई नए पर्यटन स्थल विकसित किए जा सकते हैं जिनसे उदयपुर के पर्यटन विकास को पंख लग सकते हैं। उन्होंने बायलोजिकल पार्क के द्वितीय चरण का विकास कार्य करने, माछला मगरा पहाड़ी का सौंदर्यीकरण करने, सज्जनगढ़ किले पर ऊँचा वाच टॉवर बनाकर व्यू पाइंट विकसित करने, पास के जंगल में जानवरों की सेंचुरी स्थापित करने, कैफेटेरिया व पर्यटक विश्राम स्थल बनाने, बड़ी तालाब का पर्यटन विकास तथा घुड़सवारी सुविधा करने, चीरवा घाटे पर पर्यावरण स्थल बनाने, बाघदड़ा में मगरमच्छ सेंचुरी विकसित करने तथा आम लोगों को पर्यटन स्थलों की सैर कराने हेतु कम खर्च वाली पर्यटक बसों की सुविधा आरंभ करने पर जोर दिया।

खानमंत्री श्री रिणवा ने उदयपुर को दिव्यधरा वाला शहर बताया और कहा कि गृहमंत्री द्वारा सुझाये कार्यों को पूरी बेहतरी के साथ कराया जाएगा। उन्होंने वन विकास एवं संरक्षण की गतिविधियों में सबकी भागीदारी पर जोर दिया और कहा कि प्रकृति से जुड़ाव ही हमारी समस्याओं और तनावों से मुक्ति का अच्छा माध्यम है। उन्होंने छायादार, औषधीय एवं फलदार पौधे लगाने के साथ-साथ पहाड़ियों को सघन हरी-भरी बनाने पर जोर दिया। उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने ग्रामीण क्षेत्रों में संपर्क सड़कों के लिए स्वीकृति दिए जाने की प्रक्रिया को सरल बनाने की आवश्यकता जताई। नगर निगम के महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने उदयपुर के पर्वतीय सौंदर्य को निखारने, हरियाली का विस्तार करने और वानिकी पर्यटन को बढ़ावा देने पर जोर दिया और नगर निगम की ओर से हरसंभव सहयोग प्रदान करने की सहमति व्यक्त की। प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. एस.एस. चौधरी ने बर्ड पार्क को सिंगापुर के बर्ड पार्क की तर्ज पर बनाने तथा इसे देश के प्रथम बर्ड पार्क के रूप में विकसित करने की जानकारी दी। समारोह में मावली विधायक दलीचन्द डांगी, पूर्व सभापति रवीन्द्र श्रीमाली, पूर्व महापौर रजनी डांगी, उप महापौर लोकेश द्विवेदी, दिनेश भट्ट उपस्थित थे। सभी अतिथियों को उपरणा एवं तुलसी का पौधा भेंट कर विभागीय अधिकारी टी. मोहनराज, शिखा मेहरा, हरिणी वी., राहुल भटनागर, आईपीएस मथारू, लायक अली खान ने स्वागत किया।

कान्यो मान्यो कागलो

कान्यो बोला- इस बार बसंत ऋतु आ गई और कुछ पता भी नहीं चला। अब प्रकृति के क्रियाकलापों में भी बदलाव दिखाई दे रहा है। मान्यो ने हां भरी और कहा- संस्कृत में कहा गया है- 'वसंत काले समीपे काक: काक: पिक: पिक:।' वसंत के आने पर कागले यानी कौए का गला खुलता है और कोयल का स्वर भी निखर उठता है तब पता चलता है कि दोनों में कौन काग है और कौन कोयल। इसबार सचमुच ऐसा कुछ हुआ लगा ही नहीं और न कहीं कौआ या कि कोयल ही दिखाई दी।

कान्यो बोला- दोनों ही रहस्यमय हैं। कोयल को महाकवि प्रसाद ने 'अहा कौन है पंचम स्वर से कोकिल' बोला लिखकर उसे पुरूषवाची माना। अधिकतर तो उसे स्त्रीवाची ही मानते हैं तो उसका पुरूष कौन हुआ?

मान्यो बोला- देश के सभी प्रांतों में नवविवाहिता को कोयल की उपमा दी जाती है। विरहिणी को भी कोयल कहा। राजस्थान में विदा होती लड़की को 'छोड़ दादाजी रो हेत कोयलबाई सिध चाल्या।' गुजरात में 'कोयलड़ी र हु कै छै बेनी ने मांडवे।' मालवी में 'वनखंड री ए कोयल, वनखंड छोड़ कठे चाली।' कुमाऊ में 'बागां दी ए कोयले बागे छड्डी कत्थू चाल्योए' कहा जाता है।

कान्यो कान में बोला- रहस्य कई बार रहस्य ही बना रहता है। सच तो यह है कि कोयल का पुरूष कौआ ही है। उसी के संसर्ग से इसके अंडे होते हैं। कागली के अंडे जैसे ही इसके अंडे होते हैं। इसलिए उसी के घोंसले में ये अपने अंडे छोड़ आती है जहां कागा और कागली दोनों मिलकर उनकी सेवना करते हैं। जब अंडों से बच्चे निकलते हैं तब उन्हें पता चलता है कि ये कोयल के जाये हैं। इसका उन्हें पछतावा भी होता है।

यह कहावत भी यहीं से निकली- 'अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।' कोयल कागली से छोटी होती है। यह बसंत ऋतु में ही सर्वाधिक बोलती है जब इसका पूरा कंठ खुल पड़ता है। कोयल के सभी अंडों से कोयल ही निकलती है। यदि अपवाद स्वरूप कभी कोई बच्चा निकल आता है तो वह पुरूषत्व विहीन ही होता है और तिरष्कृत जीवन ही व्यतीत करता है। ऐसे पुरूष कोयल के पंख पर लाल धब्बा होता है।

मान्यो चुपचाप गंभीर बन ध्यान से सारी बातें सुनता रहा। बोला- तू तो बड़ा ज्ञानी भेदू है। मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं था। कान्यो बोला- किसी को कहना मत। ऐसी बातें दूसरों को बताने से भेद चला जाता है। ईश्वर ज्ञान हर लेता है।

गत दिनों मुम्बई में आयोजित लिट-ओ-फेस्ट समारोह में स्मिता पारीख लिखित नजमे इंतजार पुस्तक का लोकार्पण करते अतिथि।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।